ISBN : 978-81-951800-8-0

# भावनात्मक बुद्धिमत्ता

## छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुध्दि का तुलनात्मक अध्ययन

लेखिका
डॉ. सुरेखा जवादे

Aditi Publication
Raipur, Chhattisgarh, India

# भावनात्मक बुद्धिमत्ता

(छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन)

लेखिका
डॉ. सुरेखा जवादे
भिलाई, जिला–दूर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

**Publisher**
**Aditi Publication**, Raipur, Chhattisgarh, INDIA

# भावनात्मक बुद्धिमत्ता

(छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन)

**2021**
Edition - **01**
**Date of Publication : 27/07/2021**

लेखिका
डॉ. सुरेखा जवादे
भिलाई, जिला–दूर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

ISBN : **978-81-951800-8-0**

**Copyright© All Rights Reserved**
No parts of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of original publisher.

Price : Rs. **180/-**

Printed by
**Yash Offest,**
Lily Chowk, Purani Basti Raipur
Tahasil & District Raipur Chhattisgarh, India

Publisher :
**Aditi Publication**,
Near Ice factory, Opp Sakti Sound Service Gali,
Kushalpur, Raipur, Chhattisgarh, INDIA
+91 9425210308

# अनुक्रमणिका


| CH. | Title | Page |
|---|---|---|
| 01. | 1.0 प्रस्तावना | 01 |
| | 1.1 अध्ययन का महत्व | 03 |
| | 1.1.1 संवेग | 04 |
| | 1.1.2 बुद्धि | 07 |
| | 1.1.3 संवेगात्मक बुद्धि की अवधारणा | 11 |
| | 1.2 समस्या कथन18 | |
| | 1.3 संक्रियात्मक परिभाषा | 18 |
| | 1.3.1 छात्रावासी | 18 |
| | 1.3.2 गैर छात्रवासी | 18 |
| | 1.3.3 संवेगात्मक बुद्धि | 18 |
| | 1.4 अध्ययन की सार्थकता | 19 |
| | 1.5 अध्ययन का उद्देश्य | 19 |
| | 1.6 अध्ययन की परिकल्पना | 19 |
| | 1.7 अध्ययन का परिसीमा | 20 |
| 02. | 2.0 संबंधित शोध कार्यों का अध्ययन | 21 |
| | 2.1 संबंधित शोध अध्ययन भूमिका | 21 |
| | 2.2 भारतीय पृष्ठभूमि से संबंधित शोध अध्ययन | 21 |
| | 2.3 विदेशी पृष्ठभूमि से संबंधित शोध अध्ययन | 26 |
| 03. | 3.0 शोध पद्धति | 29 |
| | 3.1 भूमिका | 29 |
| | 3.1.1 अनुसंधान के प्रकार | 30 |
| | 3.2 शोध प्रारुप | 31 |
| | 3.3 शोध प्रविधि | 31 |

| | | |
|---|---|---|
| | 3.4 जनसंख्या | 32 |
| | 3.5 प्रतिदर्श | 33 |
| | 3.5.1 प्रतिदर्श विधि | 35 |
| | 3.6 उपकरण | 36 |
| | 3.6.1 उपकरण की व्याख्या | 37 |
| | 3.6.2 उपकरण का प्रशासन | 39 |
| | 3.6.3 परीक्षण का फलांकन | 39 |
| | 3.6.4 परीक्षण चयन का मापदंड | 39 |
| | 3.7 आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण | 40 |
| 04. | 4.0 प्रदत्तों की प्राप्ति, व्याख्या एवं विश्लेषण | 43 |
| | 4.1 भूमिका | 43 |
| | 4.2 प्रदत्तों की व्याख्या एवं विश्लेषण | 44 |
| | 4.3 परिकल्पनाओं की पुष्टि | 45 |
| 05. | **निष्कर्ष, सुझाव एवं अनुकरणीय अध्ययन** | |
| | 5.1 भूमिका | 52 |
| | 5.2 निष्कर्ष | 52 |
| | 5.3 सुझाव | 53 |
| | 5.4 भावी अध्ययन हेतु प्रस्तावित समस्याए | 54 |
| 06. | **सारांश** | |
| | 6.1 भूमिका | 56 |
| | 6.2 अध्ययन का महत्व | 56 |
| | 6.3 संवेग | 57 |
| | 6.4 बुद्धि | 58 |
| | 6.5 संवेगात्मक बुद्धि की अवधारणा | 59 |
| | 6.5.1 संवेगात्मक बुद्धि के तत्व | 59 |

| | | |
|---|---|---|
| | 6.5.2 संवेगात्मक बुद्धि का प्रयोग | 60 |
| | 6.5.3 संवेगात्मक बुद्धि का अभाव | 60 |
| | 6.5.4 संवेगात्मक बुद्धि अधिगम | 60 |
| | 6.6 समस्या कथन | 60 |
| | 6.7 संक्रियात्मक परिभाषा | 61 |
| | 6.7.1 छात्रावासी | 61 |
| | 6.7.2 गैर छात्रावासी | 61 |
| | 6.7.3 संवेगात्मक बुद्धि | 61 |
| | 6.8 अध्ययन का उद्देश्य | 61 |
| | 6.9 अध्ययन की परिकल्पना | 62 |
| | 6.10 अध्ययन की परिसीमा | 63 |
| | 6.11 जनसंख्या | 63 |
| | 6.12 प्रतिदर्श | 63 |
| | 6.13 शोध प्रारूप | 64 |
| | 6.14 शोध प्रविधि | 64 |
| | 6.15 उपकरण | 64 |
| | 6.16 निष्कर्ष | 65 |
| | **संदर्भ ग्रंथ सूची (Annexure-I)** | 67 |
| | **शब्दावली (Annexure-II)** | 70 |
| | **परिशिष्ट संवेगात्मक बुद्धि मापनी** | 74 |

## सारणी सूची


| क्र | सारणी क्रमांक | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 1. | 3.1 | विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रावासी विद्यार्थियों की संख्या | 32 |
| 2. | 3.2 | विद्यालय में अध्ययनरत गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संख्या | 33 |
| 3. | 3.3 | विद्यालयों में अध्ययनरत चयनित छात्रावासी विद्यार्थियों की संख्या | 36 |
| 4. | 3.4 | विद्यालयों में अध्ययनरत चयनित गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संख्या | 36 |
| 5. | 4.1 | छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी मान | 46 |
| 6. | 4.2 | छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी मान | 47 |
| 7. | 4.3 | छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी मान | 48 |
| 8. | 4.4 | छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी मान | 49 |
| 9. | 4.5 | गैर छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी मान | 49 |

# अध्याय 01

## 1.0 प्रस्तावना

एक राष्ट्र अथवा समाज के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधन मानव है। शिक्षा मानव विकास का मूल आधार हैं। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला–कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। और यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ हो जाता है। बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद ही उसके माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य उसे सुनना और बोलना सिखाने लगते हैं। परम्परागत रूप में माता–पिता ही पूर्णरूप से बालक के जीवन के प्रारम्भिक वर्षो में उसके विकास के प्रति उत्तरदायी होते है। जव बच्चा कुछ बड़ा होता है। तो उसे उठने–बैठने, चलने–फिरने, खाने–पीने तथा सामाजिक आचरण की विधियाँ सिखाई जाने लगती हैं। विद्यालय में उसकी शिक्षा बड़े सुनियोजित ढ़ंग से चलती है। विद्यालय के साथ–साथ उसे परिवार एवं समुदाय में भी कुछ न कुछ सिखया जाता रहता है और सीखने–सिखाने का यह क्रम विद्यालय छोड़ने के बाद भी चलता रहता है तथा यह प्रक्रिया जीवन भर चलती रहती है। समाज में सदैव चलने वाला यह प्रयोजन शिक्षा है। शिक्षा जहां एक ओर व्यक्ति का समग्र विकास करती है, तो दूसरी ओर वह उसे प्रत्येक परिस्थिति में कार्य करने एवं समायोजन करने के भी योग्य बनाती है। शिक्षा के माध यम से ही व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास संभव है।

शिक्षा के द्वारा ही उसके चरित्र का निर्माण संभव है। जिससे लगभग सभी शिक्षित एवं अपने जीवन में विकास कि

ओर अग्रसर रहते है। वर्तमान में हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण हो , मस्तिष्क की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके। यह कहा जा सकता है कि शिक्षा बालक के नैतिक, शारीरिक, सेवेगात्मक, बौद्धिक एवं आन्तरिक ज्ञान को बाहर लाने में योग देने वाली एक क्रिया है। चरित्र निर्माण में मानवीय संवेगों की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा जगत से जुड़े विद्यार्थी कार्यों को स्वयं के संवेगो से प्रेरित होकर ही करते हैं। इस प्रकार के संवेग विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास और व्यवहार के आधार है। जब बालक काष्शारीरिक विकास हो रहा होता है, उसके संवेगात्मक तथा सामजिक विकास की नींव रखी जा रही होती है, उस समय माता पिता का प्रभाव ही सबसे महत्वपूर्ण होता है।

प्राचीन भारत के मनीषी इस तथ्य से भलीभांति अवगत थे कि शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, समाज की चर्तुमुखी उन्नति और सभ्यता की बहुमुखी प्रगति की आधारशिला है। अतः उन्होंने शिक्षा की ऐसी प्रशंसनीय प्रणाली का प्रतिपादन किया जिसने न केवल विशाल वैदिक साहित्य रखा, वरन ज्ञान के विधि ा क्षेत्रों में मौलिक विचारकों को भी जन्म दिया, जिनसे भारत का भाग्य आज भी गौरव से उन्नत है। शिक्षा के द्वारा निरुपाय और पराधीन व्यक्ति सब प्रकार से विकसित होकर समाज में उपयुक्त स्थान ग्रहण करता है। शिक्षा के माध्यम से ही मानव जाति द्वारा अर्जित सहस्त्रों वर्षों के अनुभव बालक को हस्तांतरित कर दिए जाते है। शिक्षा के माध्यम से ही वह अपने समाज की संस्कृति को ग्रहण करता है। शिक्षा के द्वारा ही उसके चरित्र का निर्माण होता है और वह आत्म विकास के पथ पर अग्रसर होता है।

प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक समयानुसार

अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए व्यवस्थाएं बनाई गई। जहां प्राचीनकाल में विद्यार्थियों को गहन अध्ययन के लिए गुरुकुल जैसी व्यवस्थाएं भी दी गई थी, जिसके तहत गुरुकुल में रहकर अध्ययनरत विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास अपेक्षाकृत बेहतर हुआ है। इसी परम्परा को अपनाते हुए आज आधुनिक रुप से इस व्यवस्था को छात्रावास का नाम दिया गया है।

शिक्षा माता के समान पालन–पोषण करती है। पिता के समान उचित मार्ग दर्शन द्वारा अपने कार्यों में लगाती है तथा पत्नी की भांति सांसारिक चिंताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा ही हमारी कीर्ति का प्रकाश चारो ओर फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है एवं हमारे जीवन को सुसंस्कृत बनाती है।

भारतीय दृष्टिकोण में शिक्षा का अर्थ है आत्म साक्षात्कार, आत्मखोज बंधनों से मुक्ति, सद्‌गुणों का विकास व मनुष्य के अंदर दिए देवत्व कि प्राप्ति। शिक्षा मनुष्य को देवत्व के स्तर तक ले जाने वाली प्रक्रिया है। इसमें शिक्षा के आध्यात्मिक विचारों, चरित्र निर्माण तथा ज्ञान का प्रभाव झलकता है। शिक्षा मनुष्य के जीवन का रुपान्तरण कर उसे उदात गुणों से मंडित करती है।

## 1.1 अध्ययन का महत्व

आज आधुनिक पीढ़ी में बालकों में अनेक प्रकार की

समस्याएं है, जैसे कुसमायोजन प्रवृत्ति, अपराधी प्रवृत्ति आदि इसका कारण है कि वे भावात्मक रुप से स्थिर नहीं है। क्योंकि उन्हें पालकों, शिक्षकों का सही निर्देशन नहीं मिलता। यह उनके कैरियर को प्रभावित करता है तथा वे जीवन में सफल नहीं होते किन्तु यदि बालक को एक स्वस्थ वातावरण दिया जाए तो वह आसानी से सहयोगात्मक व्यवहार, अनुशासित जीवन, सफलता लिए प्रेरित व्यवहार अपना लेगा। आज विभिन्न विषयों के अंतर्गत शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति आ चूकि है। समस्याओं के बारे में आज हमें पूर्ण और सम्यक् जानकारी की आवश्यकता है तथा उन समस्याओं के निदान कि भी आवश्यकता है। यदि बालक को एक स्वस्थ वातावरण न दिया जाए जो उसके व्यवहार में तनाव, क्रोध, पढ़ाई में अरुचि व किसी चीज को पाने में कठिनाई होने लगती है।

बालकों के शारीरिक विकास के साथ–साथ उसका संवेगात्मक, सामाजिक एवं मानसिक विकास भी होता रहता है। संवेगात्मक बुद्धि का विकास मानव जीवन के विकास एवं उन्नति के लिए अपना विशेष महत्व रखता है। यह विकास मानव के सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करता है। इनके सही विकास के अभाव में व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व निर्धारित हो जाता है।

विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि को समझने के उद्देश्य से हमारा यह अध्ययन किया गया है। संवेग के कारण कभी–कभी व्यक्ति इतना प्रेरित हो जाता है कि जाति, धर्म, देश और मानवता के लिए बड़े–बड़े कार्य करने के लिए तत्पर हो जाता है और ऐसे कार्य भी कर जाता है।

### 1.1.1 संवेग

बच्चे की शिक्षा तथा विकास में प्रवृत्तियों की भाँति संवेग भी प्रमुख शक्ति है। संवेगों को कर्मो का श्रोत कहा जाता है।

जिस प्रकार फूल में सुगंध होती है उसी तरह हर मानवीय क्रिया में संवेग होते हैं। संवेग का अर्थ है हिलाना, उत्तेजित करना, कौतूहल पैदा करना या उद्दीप्त करना। संवेग भाव या अनुभूति के अति निकट होने के कारण जब भाव की मात्रा बढ़ती है तब शरीर उद्दीप्त हो जाता है। इस उद्दीप्त अवस्था को ही संवेग (भय, क्रोध, प्रेम, चिंता, ईर्ष्या, जिज्ञासा) कहते हैं। मनुष्य अपनी रोजाना की जिन्दगी में सुख, दुःख, भय, क्रोध, प्रेम ईर्ष्या ,घृणा आदि का अनुभव करता है। मानव जीवन में संवेगों का अत्यधि ाक महत्व है। यदि संवेगों का विकास संतुलित रुप से नहीं होता है तो व्यक्ति का संपूर्ण व्यक्तित्व विघटित हो जाता है। संवेग मानव व्यवहार का असामान्य अंग है जिसका अर्थ उत्तेजित करना है। जब भी संवेगात्मक व्यवहार प्रकट होता है, कुछ न कुछ विशेषताएं प्रकट होती है। संवेगो में शारीरिक परिवर्तन होते है अर्थात् जब हम संवेगों के प्रभावाधीन होते हैं तो हमारे भीतर शारीरिक परिवर्तन आ जाता हैं, यथा दिल की धड़कन में, नाड़ी की गति में बल्ड प्रैशर में, पाचन संस्थान में, ग्रंथियों तथा नाड़ी संस्थान की प्रतिक्रिया में तबादीली आ जाती है।

संवेग प्रभावशाली अनुक्रिया के समान होता है। यह शरीर के समान्य एवं शारीरिक प्रतिक्रियाओं के रुप में व्यक्त होता है।

### गेट्स के अनुसार

'संवेग वे घटनायें हैं जिनमें मनुष्य अशान्त या उत्तेजित होता है।'

### रॉस के अनुसार

'संवेग चेतना ही वह अवस्था है जिसमें संवेगात्मक तत्व की प्रधानता रहती है।'

### रॉस के अनुसार

'संवेग सम्पूर्ण व्यक्ति का तीव्र उपद्रव है। इसकी उत्पत्ति मनोवैज्ञानिक कारणों से होती है तथा इसमें व्यवहार, चेतना, अनुभव तथा अंतरावयन क्रियाएं सम्मिलित है।

गिलफोर्ड ने संवेगो को दो वर्गों में वर्गीकृत किया हैः

**संवेग**

| प्राथमिक | द्वितीयक |
|---|---|
| 1. आनन्द | 1. प्रेम |
| 2. भय | 2. भय, विस्मय |
| 3. आश्चर्य | 3. पश्चाताप |
| 4. क्रोध | 4. तिरस्कार |
| 5. घृणा | 5. आशावाद |
| 6. दुख (शोक) | 6. निराशा |
| 7. स्वीकृति | 7. आज्ञाकारिता |
| 8. पूर्वाभास | 8. आक्रामकता |
| | 9. पूर्वानुमान |

उपरोक्त संवेगो के अतिरिक्त इनका वर्गीकरण इस प्रकार से किया जा सकता है।

### अ. सकारात्मक संवेग

सकारात्मक संवेगों में स्नेह, हर्ष, प्रेम, प्रसन्नता जैसी प्रतिक्रियाएं आती है। इस संवोगों में शारीरिक क्रियाओं एवं व्यवहार से सुख की अनुभूति होती है, जिससे व्यक्तिगत तथा सामाजिक कल्याण की दशा में प्रगति होती है।

### ब. नकारात्मक संवेग

नकारात्मक संवेगों में नफरत, भय, क्रोध जैसे प्रतिक्रियाएं

सम्मिलित है जिनमें शारीरिक क्रियाएं और व्यवहार व्यक्ति को लड़ने या भगाने के लिए तत्पर करती है।

**क्रोल एवं ब्रूस के अनुसार**

'इस संवेंगो में स्वयं या दूसरा अथवा समाज की क्षति या विनाश की सम्भावना हो सकती है। किशोरावस्था का मुख्य चिन्ह संवेगात्मक विकास में तीव्र परिवर्तन है'।

### 1.1.2 बुद्धि

बुद्धि शब्द प्राचीन काल से व्यक्ति की तत्परता, तात्कालिकता, समायोजन तथा समस्या समाधान की क्षमताओं के संदर्भ में प्रयोग होता रहा है। दैनिक जीवन में बुद्धि एक सामान्य शब्द है जिसका प्रयोग कई अर्थों में किया जाता है। सभी व्यक्ति समान नहीं होते हैं, उनमें बुद्धि का प्रभाव पड़ता है। मानसिक विकास के लिए उसकी मानसिक क्षमता तथा बौद्धिक क्षमता को जानना आवश्यक है। अतएव इस बुद्धि व्यक्ति की वह क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने वातावरण के प्रति अनुक्रिया करता है। वह वातावरण तथा परिस्थितियों में स्वयं को समायोजित करता है या स्वयं वातावरण के अनुकूल बन जाता है। इस दृ ष्टि से इन प्रश्नों पर विचार करना चाहिए कि बुद्धि क्या है?

बुद्धि शब्द का प्रयोग सामान्य बातचीत में बहुतायत से किया जाता है । सामान्य बातचीत के दौरान हम कहते है कि अमुक की बुद्धि तीव्र है जबकि अमुक बालक साधारण बुद्धि या मन्द बुध्घ्घ्द्ध का है। व्यक्ति समान रुप से योग्य नहीं होते हैं। मानसिक योग्यता इनके असमान होने का प्रमुख कारण है। बुद्धि विभिन्न क्षमताओं का सम्पूर्ण योग होता है। बुद्धि के सहारे व्यक्ति किसी समस्या के समाधान में सूझ का सहारा लेता है। वह व्यक्ति को वातावरण के साथ प्रभावकारी ढंग से समायोजन

करने में मदद करता है।

## बुद्धि की विशेषताएं

बुद्धि एक सामान्य योग्यता है। इस योग्यता से विभूषित व्यक्ति स्वयं को तथा दूसरे को समझने का सामर्थ रखता है। सच यह है कि सामाजिक तथा वैयक्तिक परिवेश में क्रियात्मक गतिशीलता तथा क्षमता का नाम बुद्धि है।

1. बुद्धि व्यक्ति की जन्मजात शक्ति है।
2. बुद्धि व्यक्ति को अमूर्त चिंतन की योग्यता प्रदान करती है।
3. बुद्धि व्यक्ति को विभिन्न बातों को सीखने में सहायता प्रदान करती है।
4. बुद्धि व्यक्ति की कठिन परिस्थितियों और जटिल समस्याओं को सरल बनाती है।
5. बुद्धि व्यक्ति को नवीन परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित करने का गुण प्रदान करती है।
6. बुद्धि व्यक्ति को भले, बुरे, सत्य, असत्य और नैतिक, अनैतिक कार्यो में अंतर करने की योग्यता प्रदान करती है।
7. बुद्धि पर वंशानुक्रम और वातावरण का प्रभाव पड़ता है।
8. **प्रिंटर के अनुसारः** 'बुद्धि का विकास जन्म से लेकर किशोरवस्था के मध्यकाल तक होता है।'
9. बुद्धि व्यक्ति को अपने गत अनुभवों से लाभ उठाने की क्षमता देती है।
10. **कोल एवं ब्रूस के अनुसारः** लिंग भेद के कारण बालकों और बालिकाओं की बुद्धि में बहुत ही कम अन्तर होता है।

विभिन्न विद्वानों के अनुसार बुद्धि का वर्गीकरण इस प्रकार हैः

बुद्धि

गैरेट के अुनसार — मूर्त, अमूर्त, सामाजिक

थार्नडाइक के अनुसार — अमूर्त, सामाजिक, यांत्रिक बुद्धि

आधुनिक समय में बुद्धि के प्रकारों में संवेगात्मक बुद्धि तथा आध्यात्मिक बुद्धि को भी सम्मिलित किया गया है।

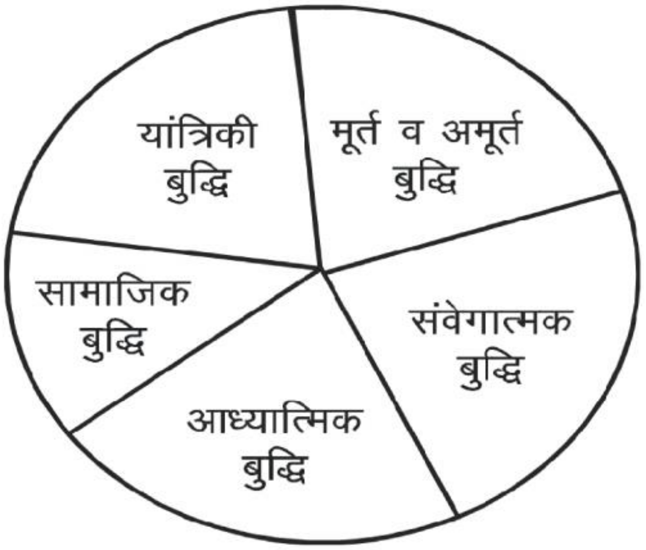


## गोरट के अनुसार

### 1. मूर्त बुद्धि

इस प्रकार की बुद्धि को गामक बद्धि या यांत्रिकी बुद्धि भी कहते हैं। इसका संबंध यंत्रो और मशीनों से होता है। जिस व्यक्ति में यह बुद्धि होती है वह यंत्रों और मशीनों के कार्य में विशेष रुचि लेता है। अतः इस बुद्धि के व्यक्ति अच्छे कारीगर,

मैकेनिक, इंजीनियर, औद्योगिक कार्यकर्ता होते हैं।

### 2. अमूर्त बुद्धि

इस बुद्धि का संबंध पुस्तकीय ज्ञान से होता है। जिस व्यक्ति में यह बुद्धि होती है वह ज्ञान का अर्जन करने में विशेष रुचि लेता है। अतः इस बुद्धि के लोग शब्दों, प्रतीको, समस्या समाधान आदि के रुप में अमूर्त बुद्धि का प्रयोग करते है एवं अच्छे डाक्टर, वकील, दार्शनिक, चित्रकार, साहित्यकार आदि होते हैं।

### 3. सामाजिक बुद्धि

इस बुद्धि का संबंध व्यक्तिगत और सामाजिक कार्यों से होता है, जिस व्यक्ति में यह बुद्धि होती है वह मिलनसार, सामाजिक कार्यों में रुचि लेनेवाला और मानव संबंध के ज्ञान से परिपूर्ण होता है। अतः इस बुद्धि के व्यक्ति अच्छे मंत्री, व्यवसायी, कूटनीतिज्ञ और सामाजिक कार्यकर्ता होते हैं।

## थार्नडाइक के अनुसार

### 1. अमूर्त बुद्धि

पुस्तकीय ज्ञान के प्रति अपने को व्यवस्थित करने की योग्यता अमूर्त बुद्धि कहलाती  है। अमूर्त बुद्धि  स्वयं अपने को ज्ञानोपार्जल के प्रति रूझान, पढ़ने लिखने  और ष्शब्दों एवं प्रतीकों के रूप में आने वाली समस्याओं को हल करने के द्वारा अपने को अभिव्यक्त करती है।

### 2. सामाजिक बुद्धि

अपने समाज के अनुकूल व्यवस्थित करने की योग्यता ही सामाजिक बुध्द्धि है। यह दूसरे लोगों के साथ प्रभापपूर्ण व्यवहार करने की क्षमता है। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए सामाजिक बुद्धि नितान्त आवश्यक होती है।

### 3. यान्त्रिक बुद्धि

यह बुद्धि यन्त्रों तथा मशीनों के साथ अनुकूलन की योग्यता है। इनके होने से व्यक्ति एक कुशल कारीगर, चालक अथवा दक्ष इंजीनियर हो सकता है।

### 4. संवेगात्मक बुद्धि

इस बुद्धि को प्रकाश में लाने का श्रेय गोलमेन को जाता है। उनके अनुसार विभिन्न परिस्थितियों में आवश्यकतानुसार उचित मात्रा में संवेग का प्रदर्शन करने की योग्यता ही इस बुद्धि के अंतर्गत आती है। इसके अतिरिक्त इस प्रकार की बुद्धि वाला व्यक्ति अनावश्यक संवेगों पर सरलता से नियंत्रण भी कर लेता है। इस बुद्धि को धारित व्यक्ति एक अच्छा नेता, अभिनेता, कलाकार, प्रशासक हो सकता है।

### 5. आध्यात्मिक बुद्धि

आध्यात्म का ज्ञान तथा दर्शन अत्यंत गहरा एवं सूक्ष्म है। इनको समझने एवं समझाने के लिए जिस बुद्धि की आवश्यकता होता है उसे आध्यात्मिक बुद्धि कहते हैं। इस बुद्धि में निपुण व्यक्ति अच्छा दार्शनिक, धर्म उपदेशक तथा मार्गदर्शक बन जाता है।

## 1.1.3. संवेगात्मक बुद्धि की अवधारणा

डेनियल गोलमेन द्वारा विकसित की गई संवेगात्मक बुद्धि एक नई अवधारणा है यह व्यक्ति की वह क्षमता होती है जो संवेगों का बोध कराए तथा विचारों के अनुसार उसे संचालित करे तथा संवेगात्मक ज्ञान प्रदान करें जिससे संवेगात्मक व बौद्धिक बुद्धि की उन्नति कर सके। संवेगात्मक बुद्धि दो महत्वपूर्ण घटकों से मिलकर बना है।

संवेगात्मक बुद्धि = संवेग + बुद्धि

संवेग एक प्रकार का अनुभव है जो शारीरिक घटक व ज्ञानात्मक तत्वों द्वारा व्यवहार में प्रदर्शित होता है।

### अ. संवेगात्मक बुद्धि का क्षेत्र

व्यक्ति अपने ज्ञानात्मक विकास में जो सोचता है या विचार करता है उसे शारीरिक विकास में महसूस करता है व व्यवहारात्मक विकास में क्रिया के रुप में व्यक्त करता है। संवेगात्मक बुद्धि वाला व्यक्ति अपने जीवन को सही तरीके से नियंत्रित करता है तथा दूसरे की भावनाओं को भी प्रभावी रुप से समझता है। संवेगात्मक बुद्धि सामाजिक बुद्धि का ही एक प्रकार है जिसमें व्यक्ति अपनी भावनाओं पर सही प्रकार से नियंत्रण कर अपने संबंधों को बनाए रखता है।

### ब. संवेगात्मक बुद्धि के तत्व

#### 1. अभिप्रेरणा

लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए स्वयं प्रेरित होने की क्षमता अभिप्रेरणा में शामिल है।

#### 2. समानुभूति

दूसरे की भावनाओं को समझना, दूसरे के दृष्टिकोण, भिन्नताओ, गुण–दोष के विषय में सोचना समानुभूति के अंर्तगत आता है।

### 3. स्व जागरुकता

स्वयं की भावनाओं का निरीक्षण एवं पहचान, विचारो, भावना तथा प्रतिक्रिया के बीच संबंधो की पहचान।

### 4. स्व–प्रकटीकरण

संबंधो में विश्वास व मूल्य बनाए रखना।

### 5. निश्चयता

बिना किसी नाराजगी के अपनी भावनाओं के विषय में निश्चयपूर्वक कहना।

### 6. संबंधों में कुशल

सामाजिक संबंधो को निभाने में कुशल व प्रभावी होते हैं।

संवेगात्मक बुद्धि हमारे व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण भाग है। यह सामाजिक अंतःक्रिया के प्रभाव व प्रकृति का निर्धारण करता है।

## स. संवेगात्मक बुद्धि का उपयोग निम्न रुपों में होता हैः

### 1. स्वस्थ संबंधों का निर्माण

आत्मीय व स्वस्थ संबंध हमारे मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। संवेगात्मक बुद्धि स्वस्थ संबंधों के निर्माण में सहायता करती है, इसके द्वारा हम अपने भावों को सकारात्मक रुप से स्पष्ट कर सकते हैं।

### 2. कार्य स्थल पर संवेगात्मक बुद्धि

संवेगात्मक बुद्धि कार्यस्थल पर दबाव या तनाव कम करने में सहायक होती है।

### 3. संवेगात्मक बुद्धि और शारीरिक समस्या

नकारात्मक भाव हमारे स्वस्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं, जिससे हमें अस्थमा, सिरदर्द, हृदय की बीमारियां आदि रोग होने की संभावना रहती है। अतः संवेगात्मक बुद्धि नकारात्मक भावों को दूर कर हमारे शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखती है।

### 4. अभिभावकों में संवेगात्मक बुद्धि

अभिभावकों की संवेगात्मक बुद्धि उनके बच्चों के लिए स्वस्थ संवेगात्मक वातावरण का निर्माण करती है तथा उनमें सकारात्मक गुणों के विकास में सहायता करती है—जैसे आत्मविश्वास, सामंजस्य, सहयोग, आत्म नियंत्रण, अर्थात सम्पूर्ण विकास करती है।

### 5. लक्ष्य निर्धारण

संवेगात्मक बुद्धि लक्ष्य प्राप्त करने में दिशा निर्देश करती है।

### 6. संवेगात्मक बुद्धि व किशोरावस्था

संवेगात्मक बुद्धि का प्रयोग 1990 में किया गया । जॉन डी. मेयर एवं पीटर  सेलोवि की सिद्धांतो से प्रभावित होकर गोलमेन ने संवेगात्मक बुद्धि नामक पुस्तक 1995 मे लिखी। संवेगात्मक बुद्धि व किशोरावस्था में कई बाते हमारे समक्ष उपस्थित हो जाती है। कशोर संवेगात्मक रुप से पर्याप्त विकसित हो जाते है। उनमें चिन्ता, भय, प्रेम, ईर्ष्या और क्रोध आदि सभी संवेग अपने विकास के शिखर पर पहुँच जाते हैं। संवेगात्मक विकास के तीव्र दौर में किशोर एक बार फिर शिशु की तरह ही संवेगात्मक अस्थिरता ओर तीव्रता का अनुभव करते है। इस आयु में शारीरिक वृद्धि और विकास के अपने चरम सीमा पर पहुँच जाने के कारण किशोर गत्यात्मक कार्यो को करने के लिए

पर्याप्त शक्ति देने में समर्थ बन जाता है। किशोरों की संवेगात्मक अभिव्यक्ति प्रायः प्रखर और सक्रिय ढ़ंग से होती है किसी और अवस्था में बच्चा उतना अधिक बेचौन ,उग्र, भावुक, संवेदनशील नहीं होता जितना कि किशोरावस्था में होता हैं।

**रॉस के शब्दों में:** किशोर का जीवन बहुत अधिक संवेगात्मक होता है जिसमें हमें एक बार फिर उसके अत्यधिक उग्र और निराशा की गहराइयों के बीच झूलते हुये व्यवहार के माध्यम से मानव व्यवहार के अनुकूल और प्रतिकूल दोनों पक्षों का ही मिला–जुला रुप देखने को मिलता है । इसी कारण प्रायः किशोवस्था को तनाव और दबाव की अवस्था का नाम दिया जाता है । जैसा कि रॉस ने संकेत किया है कि किशोरों की संवेगात्मक अभिव्यक्ति में स्थायित्व नहीं होता । उनके संवेग अधिक स्थायी और परिवर्तनशील होते है, परंतु उनकी गति बहुत प्रबल होती है । इसलिये एक किशोर को अपने संवेगों को पूरी तरह नियन्त्रण रखना बहुत कठिन होता है । वास्तव में किशोरावस्था तक पहुँचते– पहुँचते बालक में संवेग, स्थायी भावों के रुप में अपनी गहरी जड़ जमा लेते है । उसकी आत्म–चेतना, आत्म सम्मान औार स्वाभिमान में अत्यधिक वृद्धि हो जाती है । समूह भक्ति और प्रेम के स्थायी भाव अधिक विकसित होकर उसे बहुत अधिक भावुक बना देते है । वह जो भी अनुभव करता है । उसे , बहुत गहराई से अनुभव करता हैं । और फिर अपनी प्रतिक्रिया भी बहुत उग्र ढ़ंग से व्यक्त करता है । संवेगात्मक बुद्धि युवावस्था की अनेक समस्याओं का निदान करने में सहायक होती है जैसे अकेलापन, एकाग्रता की कमी, जिद्दीपन आदि।

## संवेगात्मक बुद्धि और शारीरिक समस्या

### द. संवेगात्मक बुद्धि का अभाव

संवेगात्मक बुद्धि में कमी के कारण वर्तमान समय में बच्चों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे हिंसा, अपराध और आत्महत्या आदि।

#### 1. सामाजिक समस्या

पीछे हटना, अकेलापन, ऊर्जा या उत्साह में कमी, उदास होना, दूसरों पर पूर्णतया निर्भर आदि।

#### 2. चिंता या हीन भावना

अनेक प्रकार के भय व चिंताओं से घिरा होना, अकेलापन, प्रेम में कमी, दुखी रहना, तनाव आदि।

#### 3. विचारों की समस्या

एकाग्रता में कमी, स्थिर न बैठना, दिवा स्वप्न, बिना विचारों के कार्य करना, स्कूल कार्य में अयोग्य आदि।

#### 4. अपराधी या आक्रमक

झूठ बोलना, धोखा देना, परेशानियों से घिरे रहना, दूसरे की चीजों को नुकसान पहुंचाना, स्कूल व घर में अनुशासनहीनता आदि।

### ई. संवेगात्मक बुद्धि अधिगम

**गोलमेन के अनुसारः** सही प्रयासों द्वारा संवेगात्मक बुद्धि को सीखा तथा उसमें सुधार किया जा सकता है। पारिवारिक जीवन संवेगात्मक अधिगम की प्रथम पाठशाला है। उन्होंने बताया कि अपने विवाहित संबंधों में जो युगल भावात्मक रुप से जुड़े होते हैं वे अपने बच्चों को संवेगो या जीवन के उतार–चढ़ाव

से उबरने में प्रभावशाली रुप से शिक्षा प्रदान करते हैं तथा वे अपनी समस्या का निदान करने में सफल होते हैं।

संवेगात्मक बुद्धि में सुधार के लिए निम्न प्रयास होने चाहिए:

### 1. स्वयं की पहचान

स्वयं की पहचान होना आवश्यक है। हमें अपनी शक्तियों की पहचान होनी चाहिए। हमें दूसरों से वार्तालाप कर अपनी कमियों को जानकर उसे दूर  करना चाहिए।

### 2. भावों के कारणों की पहचान

भावों के कारणों को जानना पहचानना जरूरी है। हमें आने वाले समस्याओं से हताश न होकर पहले से सतर्क रहना चाहिए।

### 3. आत्म नियंत्रण

यदि हमें किसी आदत से परेशानी हो तो उस पर नियंत्रण कर समस्या से निदान कर लेना चाहिए। आत्म नियंत्रण के लिए यह आवश्यक है।

### 4. क्रोध और भय में व्यवहार

क्रोध और भय हमारे संवेग का ही प्रकार है। ये संवेग जीवन में समस्या उत्पन्न करते हैं अतः इनसे बचना चाहिए।

### 5. सकारात्मक सोच का विकास

सकारात्मक सोच का विकास होना जरूरी है। हमेशा सकारात्मक प्रतिक्रिया रखनी चाहिए।

## 1.2 समस्या कथन

‘छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन।‘

## 1.3 संक्रियात्मक परिभाषा

### 1.3.1 छात्रावासी

वे विद्यार्थी जो अध्ययन ग्रहण करने हेतु परिवार से दूर विद्यालय प्रांगण में निवास करते हैं, ऐसे विद्यार्थी इस संज्ञा में सम्मिलित हैं।

### 1.3.2 गैर छात्रावासी

वे विद्यार्थी जो अध्ययन ग्रहण करने हेतु सर्वसुविधायुक्त आवासीय व्यवस्था में परिजनों के साथ रहकर शैक्षणिक संस्थाओं में शिक्षा ग्रहण करते हैं, ऐसे विद्यार्थी इस संज्ञा में सम्मिलित हैं।

### 1.3.3 संवेगात्मक बुद्धि

संवेगात्मक बुद्धि द्वारा व्यक्ति संवेगों पर नियंत्रण रखकर मानवीय संबंधों को बुद्धिमानी से क्रियान्वयन करता है।

प्रस्तुत अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धि का तात्पर्य मंगल द्वारा निर्मित एमईआईआई संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण मापनी द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमान से है।

## 1.4 अध्ययन की सार्थकता

छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के कार्यों को उसकी संवेगात्मक बुद्धि ही प्रेरित करती है। बाल्यावस्था में प्रवेश करते ही बालक के संवेगो में तीव्रता एवं उग्रता नहीं रहती है। संवेगों में सामाजिकता का भाव आ जाता है। बालक यह समझने लगते हैं कि समाज में किस समय किस प्रकार का संवेगात्मक व्यवहार करना उपयुक्त है। किशोरवास्था में संवेगात्मक विकास में तीव्र परिवर्तन देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार की समस्याएं भी आती है। सभी समस्यों का उत्तर ज्ञात करने हेतु शोधकर्ता ने इस समस्या का चयन किया है।

## 1.5 समस्या का उद्देश्य

प्रस्तुत समस्या के उद्देश्य निम्न प्रकार के हैं:

1. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर ज्ञात करना।
2. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर ज्ञात करना।
3. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर ज्ञात करना।
4. छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर ज्ञात करना।
5. गैर छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर ज्ञात करना।

## 1.6 अध्ययन की परिकल्पना

H-1 छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।

H-2 छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नहीं पाया जाता।

H-3 छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नहीं पाया जाता।

H-4 छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नहीं पाया जाता।

H-5 गैर छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नहीं पाया जाता।

## 1.7 अध्ययन की परिसीमा

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल दुर्ग एवं राजनांदगांव जिले तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का ही अध्ययन किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन केवल 5 विद्यालय के विद्यार्थियों तक ही सीमित है।

न्यादर्श के अंतर्गत 320 विद्यार्थी जिसमें छात्रावासी 160 छात्र एवं छात्राओं व गैर छात्रावासी 160 छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया है। संवेगात्मक बुद्धि का मापन मंगल द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी द्वारा किया गया है।

_____XXXX_____

# अध्याय 02

## 2.0 संबंधित शोध कार्यों का अध्ययन

### बोर्ग के अनुसार

'संबंधित अध्ययन उस नीव के पत्थर के समान है जिस पर भविष्य की इमारत खड़ी रहती है। संबंधित अध्ययन व सर्वेक्षण द्वारा हम अध्ययन को अधिक प्रभावी बना सकते हैं।'

## 2.1 संबंधित शोध अध्ययन भूमिका

संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन अनुसंधान कार्य को आवश्यक सैद्धांतिक पृष्ठभूमि प्रदान करना है तथा प्रत्येक धारणाओं को स्पष्ट करना है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इस समस्या के क्षेत्र में अनुसंधान की स्थिति क्या है। इस विषय पर क्या कार्य हुए? तथा किस तरीके से अनुसंधान कार्य को पूरा किया है।

किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधार शिला के समान है जिस पर भविष्य का सारा कार्य आधारित होता है। यदि किसी संबंधित साहित्य को समीक्षा द्वारा हम इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारा कार्य प्रभावहीन व महत्वहीन होने की संभावना है अथवा पुनरावृत्ति भी हो सकती है।

संवेगात्मक बुद्धि युक्त बालक सफलतापूर्वक जीवन यापन, प्रसन्नता, कठिनाईयों का सामना करने में सक्षम होता है तथा समाज में संतुलित सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने में सफल होता है।

## 2.2 भारतीय पृष्ठभूमि में संबंधित शोध अध्ययन

मूरजानी, जैन एवं जार्जनी (2002) ने 'महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि व व्यक्तित्व प्रकार' पर अध्ययन

किया। जिसके लिए उन्होंने विभिन्न संकायों से 120 लड़कियों को प्रतिदर्श के रूप में लिया इसका मापन चन्द्रा (1198) द्वारा विकसित संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण एवं मुहार (1192) द्वारा विकसित न्यूरोर्टिज्म इंटरोवर्सन – एक्सटरोवर्सन इंटवेन्टरी परीक्षण द्वारा किया गया।

इस अध्ययन में यह निष्कर्ष पाया गया कि संवेगात्मक बुद्धि व्यक्तित्व के प्रकार द्वारा संयत नहीं होती लेकिन न्यूरोटिज्म से ऋणात्मक रूप से संबंधित है। संवेगात्मक बुद्धि का स्तर औसत है जबकि बुद्धिमता का स्तर उच्च है इसलिए परामर्श व प्रशिक्षण द्वारा संवेगात्मक बुद्धि के स्तर को बढ़ाने की आवश्यकता है।

**एलमण्ड** (2002) ने प्रबंधकों के कार्य जीवन में निर्णय लेने की क्षमता व व्यक्तिगत संबंधों पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव पर अध्ययन किया। इसके लिए इन्होंने 150 मध्य स्तरीय प्रबंध ाकों को विभिन्न विभागों से लिया।

इस अध्ययन में यह निष्कर्ष पाया गया कि निम्न की अपेक्षा उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले प्रबंधक अपने कार्यों को अध िाक प्रभावी ढंग से सम्पन्न करते हैं।

**गाखर** (2003) ने गणितीय अवधारणा के अधिग्रहण पर संवेगात्मक बुद्धि व सामाजिक डेनोग्राफीक चरों के प्रभाव का अध्ययन किया। इसके लिए 10वीं कक्षा के 300 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में लिया। इसके लिए साराजीत ई.आई. स्केल टेस्ट, कुलश्रेष्ठ द्वारा सोशियो–इॅकोनॉमिक स्टेटस स्केल एवं स्वयं द्वारा निर्मित गणित में उपलब्धि परीक्षण उपकरण प्रयोग में लाया गया।

इस अध्ययन में यह निष्कर्ष पाया गया कि:

1. निजी स्कूलों में प्रधानाचार्य प्रबंधक तथा शिक्षकों द्वारा कड़ी निगरानी में परीक्षण करने पर विद्यार्थियों ने समस्या हल करने के लिए अतिरिक्त समय लिया।
2. सरकारी स्कूलों से अच्छे शिक्षित शिक्षकों की कमी है तथा शिक्षक स्वयं विद्यार्थियों के अध्ययन में रूचि कम लेते हैं।

**वर्मा और अलका** (2003) ने महाविद्यालयी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि व सामान्य कुशलता पर अध्ययन किया जिसके लिए 120 महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में लिया।

इस अध्ययन में यह निष्कर्ष पाया गया कि:

1. संवेगात्मक बुद्धि युक्त व्यक्ति अधिक सफल् होते हैं तथा उनमें मानसिक स्वास्थ्य समस्या भी कम होती है। वे संवेग को अच्छे से संचालित करते हैं।।
2. उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति अपेक्षा अपने वैवाहिक जीवन से संतुष्ट रहते हैं।
3. उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी की अपेक्षा कार्यों को अच्छे से संपादित करते हैं।

**शानवाल** (2003) में प्राथमिक स्कूल के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि को बढ़ाने व सह संबंध पर अध्ययन किया।

इसके लिए उन्होंने म्यूनिसिपल कार्पोरेशन ऑफ देलही स्कूल के कक्षा 4 के 200 विद्यार्थियों के लिए मेयर एवं सॉलावे (1997) द्वारा विकसित एम.ई.आई.एम. तथा टेस्ट (मंगल इमोशनल इन्टेलीजेन्स स्केल) तथा परीक्षण के लिए का प्रयोग किया।

इस अध्ययन में यह निष्कर्ष पाया गया कि:

1. संवेगात्मक बुद्धि पर सामाजिक—सांस्कृतिक कारकों का एक उत्कृष्ट प्रभाव पड़ता है।
2. लड़कियों की संवेगात्मक बुद्धि लड़कों से अच्छी है।
3. संवेगात्मक बुद्धि को उसके तत्वों या घटकों के अधिगम तथा विकसित विधियों द्वारा बढ़ाकर आसानी से विकसति किया जा सकता है।

प्रधान, बंसल और बिसवाल (2005) ने 'स्नातकोत्तरों पर संवेगात्मक बुद्धि और व्यक्तिगत प्रभावशीलता का अध्ययन किया।' परीक्षण इसके लिए 50 स्नातकोत्तरों को प्रतिदर्श के रूप में लिया इसके लिए इमोशनल इंटेलीजेंस स्केल (स्केल कूपर एवं स्वाइफ 1997) एवं पर्सनल इफेक्टिव स्केल (उदय पारीक 1989) का प्रयोग किया।

इस अध्ययन में यह निष्कर्ष पाया गया कि संवेगात्मक बुद्धि व व्यक्तिगत प्रभाव शीलता के बीच सकारात्मक संबंध है।

**उमादेवी** (2005) में किशोरों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर पर अध्ययन किया।

अभिभावकों की शिक्षा, व्यापार का संवेगात्मक बुद्धि के साथ महत्वपूर्ण व धनात्मक संबंध था। जैसे – सामाजिक सम्मान, जिम्मेदारी, संवेग, नियंत्रण, आशावादी दृष्टिकोण आदि।

**गुप्ता कौर** (2006) ने भावी शिक्षकों के बारे में संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया जिसके लिए प्रतिदर्श के रूप में विद्यार्थियों को लिया गया। इसमें उपकरण के रूप में सुरभि पुरोहित द्वारा विकसित पर्सनल प्रोफाइल सर्वे को लिया।

इस अध्ययन में यह निष्कर्ष पाया गया किः

1. 9 प्रतिशत पुरूष व 22 प्रतिशत महिला बी.एड प्रशिक्षार्थी उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले हैं।
2. 6 प्रतिशत पुरूष व 12 प्रतिशत महिला बी.एड प्रशिक्षार्थी निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले हैं।

**पाटिल** (2006) ने लिंग, संकाय व शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में शिक्षक विद्यार्थी के बारे में संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया। जिसमें 302 शिक्षक विद्यार्थी को प्रतिदर्श के रूप में लिया। इसके मापन के लिए मराठी भाषा में गोलमेन संवेग क्षमता प्रारूप पर आधारित शोधकर्ता द्वारा निर्मित ई. आई. परीक्षण लिया।

इस अध्ययन में यह निष्कर्ष पाया गया किः

1. पुरूष व महिला प्रशिक्षार्थी के संवेगात्मक बुद्धि के बीच महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
2. कला व विज्ञान संकाय के प्रशिक्षार्थी के संवेगात्मक बुद्धि में महत्वपूर्ण अंतर नही है।
3. प्रशिक्षार्थियों के ई. आई. व शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

**कादिएवन** (2006) ने शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि पर व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन किया। इसके लिए 207 शिक्षकों को प्रतिदर्श के रूप में लिया।

इस अध्ययन में यह निष्कर्ष पाया गया किः

1. संवेगात्मक बुद्धि पर शिक्षक के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
2. शिक्षक की अपेक्षा, शिक्षिका अंतः प्रेरणा का नियमन करते हैं।

3. युवा शिक्षक की अपेक्षा प्रौढ़ शिक्षक दूसरे की भावनाओं को अच्छे से समझते हैं।
4. स्नातकोत्तर शिक्षकों की समस्या समाधान क्षमता ज्यादा अच्छी है जबकि स्नातक शिक्षकों की स्व–जागरूकता संवेग क्षमता अच्छी है।
5. शिक्षक विचारों को ज्यादा प्रधानता देते हैं जबकि शिक्षिकायें व्यक्तित्व अनुभव को प्रधानता देते हैं।
6. शासकीय स्कूल की अपेक्षा निजी स्कूल के शिक्षकों में अधिक लचीलापन होता है।

**गुप्ता** (2006) ने भावी शिक्षकों के बारे में ट्रांसजिसनल स्टाइल पर लिंग भेद व आई.ई. के प्रभाव को देखा। इसके लिए 20 बीएड विद्यार्थी प्रतिदर्श रूप में लिया।

इसके मापन के लिएः

- ट्रांसजिसनल स्टाइल इन्वेन्टरी
- इमोशनल इंटेलीजेन्स स्केल (2001) बाई अनुकूल हाइड एंड संजोत दांते

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष पाया गया कि भावी शिक्षक सामान्यतः सहयोग पूर्ण व्यवहार रखते हैं लेकिन कभी–कभी इससे बचने का भी प्रयास करते हैं।

## 2.3 विदेशी पृष्ठभूमि में संबंधित शोध अध्ययन

**गोलमेन** (1995) ने संवेगात्मक बुद्धि व पूर्णतावादी पर अध्ययन किया। जैसे – नेतृत्व की भविष्यवाणी,

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष पाया गया किः

1. निम्न संवेगात्मक नेता की अपेक्षा उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति अच्छे नेता होते हैं।

2. अनुकुलित क्षमता वाले संपूर्ण व्यक्ति अच्छे नेता होते हैं।
3. पूर्णता व संवेगात्मक बुद्धि के स्तर के साथ नेतृत्व का स्तर भी बदलता है।

**गोलमेन** (2002) ने 'संवेगात्मक बुद्धि पर शिक्षण व अधिगम प्रायोगिक प्रविधि में अध्ययन किया।'

इस अध्ययन में यह निष्कर्श पाया गया कि उच्च की अपेक्षा निम्न वाले विद्यार्थियों का समूह कम विषय वस्तु होते हुए भी जीवन में सफल होते हैं।

**अब्राहम** (2003) ने संवेगात्मक बुद्धि व कार्य अभिवृत्ति व्यवहार व परिणाम के बीच संबंधों पर अध्ययन किया। इसमें वरिष्ठ संचालकों पर परीक्षण किया।

इस अध्ययन में यह निश्कर्ष पाया गया किः

1. संवेगात्मक बुद्धि का कार्य अभिवृत्ति, परोपकारी व्यवहार व कार्य परिणाम के साथ धनात्मक संबंध रहा।
2. कैरियर संबंधी प्रक्रिया पर परिवार विरोध कार्यों का प्रभाव प्रड़ता है पर कार्य संतुष्टि पर प्रभाव नहीं पड़ता।

**अब्राहम** (2006) ने संवेगात्मक बुद्धि कठिन कार्य में प्रदर्शन व संगठनात्मक नागरिकता व्यवहार संबंधों के बारे में अध्ययन किया।

इस अध्ययन में यह निश्कर्श पाया गया कि संवेगात्मक बुद्धि व कर्मचारियों के कार्य परिणामों के बीच धनात्मक संबंध पाया।

**नटालिओं, ओक्सिलिएडरा और लाउडेस** (2007) ने संवेगात्मक बुद्धि तथा आशावादी निराशावादी व्यवस्था को समझाने के लिए अध्ययन किया। इससे किशोरों के मनोवैज्ञानिक समायोजन

की भविष्यवाणी की।

इस अध्ययन में यह निष्कर्ष पाया गया कि जिन किशोरों में संवेगात्मक बुद्धि क्षमता का उच्च ज्ञान था। वे सामान्यतः जीवन में अधिक संतुष्ट होते हैं तथा कम तनाव का अनुभव करते हैं।

_____XXXX_____

# अध्याय 03

## 3.0 शोध पद्धति

शोध कार्य का आयोजन समस्या–समाधान अथवा प्रश्न के उत्तर ज्ञात करने के लिए किया जाता है। ष्शोध –प्रक्रिया का प्रथम सोपान समस्या को पहचानना होता है। मनुष्य एक जिज्ञासु प्राणी है। मनुष्य में वातावरण को समझने और समस्याओं को हल करने की प्रवृत्ति होती है, जिसके माध्यम से वह अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति को शांत करता है। मनुष्य द्वारा वातावरण समझने तथा समस्याओं को हल करने का प्रयास भलीभांति नियंत्रित और सुव्यवस्थित होता है तो उसे अनुसंधान कहते हैं। ज्ञान के कणों को इधर–उधर से आकस्मिक ढंग से चुन लेना या किसी समस्या का हल उल्टे–सीधे परीक्षणों या प्रयास व त्रुटियों द्वारा निकाल लेना भले ही ज्ञानवर्धन अनुभव हो, अनुसंध ाान नहीं कहा जा सकता। क्योंकि यह एक ऐसा व्यवस्थित तथा नियंत्रित अध्ययन है, जिसके अंतर्गत संबंधित घटनाओं के पारस्परिक संबंधों का अन्वेशण तथा विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकी विधि तथा वैज्ञानिक विधि के द्वारा किया जाता है। शोधकर्ता द्वारा प्रोजेक्ट के अंतर्गत इसे शोध प्रविधि नाम दिया गया है।

## 3.1 भूमिका

किसी भी शोध विधि में जब समस्या का चयन कर लिया जाता है, तब परिकल्पनाओं एवं उद्देश्यों का निर्माण करने के बाद अनुसंधानकर्ता के समक्ष यह समस्या आती है कि वह अपनी परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए आंकड़ों का संग्रह किस विधि से करे तथा किन उपकरणों के द्वारा करे। शोध एक वैज्ञानिक अन्वेषण पद्धति है। इसके आधार पर शोध एक व्यवस्थित, नियंत्रित निरपेक्ष, वस्तुनिष्ठ, गहन तथा अनुभाविक अध्ययन है।

इसका उद्देश्य दी गई स्पष्ट तथा सीमित समस्या से संबंधित नवीन तथ्यों तथा सामान्य नियमों की खोज करना होता है। इसका ध्येय वैज्ञानिक ज्ञान की परिधि को अधिक से अधिक विस्तृत करना तथा उपलबध नवीनतम वैज्ञानिक उपकरणों एवं स्थापित तथ्यों, नियमों व सिद्धांतो की विश्वसनीयता, परिशुद्धता एवं वैधता पुर्नपरीक्षण व पुष्टिकरण करना होता है।

इस प्रकार अनुसंधान को स्पष्ट करते हुए कोपार्ड ने कहा है:

अनुसंधान चिंतन की एक ऐसी क्रमबद्ध और विशुद्ध प्रविधि है जिसमें विशिष्ट यंत्रो, उपकरणों तथा प्रक्रियाओं का उपयोग इस उद्देश्य से किया जाता है ताकि एक समस्या का अधिक व समुचित समाधान उपलब्ध हो सके।

अध्ययन की प्रक्रिया को व्हीटनी ने निम्न प्रकार से परिभाषित किया है:

'शिक्षा अनुसंधान शिक्षा क्षेत्र की समस्याओं के समाधान खोजने का प्रयास करता है तथा इस कार्य की पूर्ति हेतु इसमें वैज्ञानिक, दार्शनिक एवं समालोचनात्मक कल्पना चिंतन विधियों का प्रयोग किया जाता है।'

**कुक के अनुसार:** 'वैज्ञानिक अनुसंधान एक ऐसा व्यवस्थित, नियंत्रित, अनुभाविक तथा सूक्ष्म अन्वेषण है, जिससे प्राकृतिक घटनाओं में व्याप्त अनुमानित संबंधो का अध्ययन परिकल्पनात्मक तर्क–वाक्यों द्वारा किया जाता है।'

### 3.1.1 अनुसंधान के प्रकार

1. ऐतिहासिक अनुसंधान
2. विवरणात्मक अनुसंधान,
3. प्रायोगिक अनुसंधान

1. **ऐतिहासिक अनुसंधानः** इस प्रकार के अनुसंधान के अंतर्गत अतित की घटनाओं, संस्थाओं, समूहों, संगठनो, परम्पराओं आदि का विवेचन, अन्वेषण तथा विश्लेषण किया जाता है।
2. **विवरणात्मक अनुसंधानः** इस प्रकार के अनुसंधान के अंतर्गत वर्तमान की घटनाओं, तथ्यों तथा निबंधों के अध्ययन को अधिक बल तथा महत्व दिया जाता है।
3. **प्रायोगिक अनुसंधानः** प्रायोगिक अनुसंधान में चरों के प्रकार्यात्मक संबंधों का अध्ययन कठोर वैज्ञानिक मापदंड पर नियंत्रित स्थितियों के अंतर्गत किया जाता है।

## 3.2 शोध प्रारुप

**चर**

| स्वतंत्र चर | परतंत्र चर |
|---|---|
| 1. छात्रावास / गैर छात्रावास | 1. संवेगात्मक बुद्धि |
| 2. लिंग–छात्र एवं छात्राएं | |

## 3.3 शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में सामग्री प्राप्त करने हेतु सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया है। सर्वेक्षण से तात्पर्य ऐसे अध्ययनों से है जिसमें कि अनुसंधानकर्ता किसी विशेष स्थान पर जाकर कुछ अवस्थाओं या परिस्थितियों से संबंधित सही सूचनाओं का संकलन करता है। मंगल कि संवेगात्मक बुद्धि मापनी द्वारा छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के आंकड़े प्राप्त किए गए हैं। छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी समूहों के मध्य टी–मूल्य द्वारा अंतर ज्ञात किया गया है। लिंग का प्रभाव देखने हेतु छात्र एवं छात्राओं के मध्य टी–मूल्य की गणना की गई है।

## 3.4 जनसंख्या

जनसंख्या से तात्पर्य शोध कार्य के लिए उपलब्ध विद्यार्थियों की संख्या से है। प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के अंतर्गत कक्षा 10वीं से 12वीं में अध्ययनरत समस्त छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थी हैं।

लघु भारत के रुप में प्रसिद्ध छत्तीसगढ़ की आत्मा के नाम से विख्यात इस्पात नगरी भिलाई–दुर्ग जिले में अवस्थित है। सन 1964 में पं. जवाहर लाल नेहरु के करकमलों से उद्घाटित भिलाई इस्पात संयंत्र इस नगरी की धड़कन है। यहां की आबादी लगभग 8 लाख है। भिलाई नगर छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से 29 कि.मी. पश्चिम में स्थित है। यह दुर्ग से 10 कि.मी. पूर्व में स्थित है। भिलाई को 11 वृत्तखंडो में बांटा गया है। इस नगरी के आसपास का क्षेत्र भी तेजी से इस्पात नगरी की तरह प्रगति पर है।

**सारणी क्रमांक 3.1** : विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रावासी विद्यार्थियों (10+12) की संख्या

| विद्यालयों मे अध्ययनरत छात्रावासी विद्यार्थियों (10+12) की संख्या | | | | |
|---|---|---|---|---|
| क्र. | विद्यालयों का नाम | छात्रावासी विद्यार्थियों की संख्या | | |
| | | कुल ख्या | कुल छात्र | कुल छात्राएं |
| 1. | ए.पी.एस स्कूल, धनोरा | 160 | 090 | 070 |
| 2. | मैत्री विद्यानिकेतन स्कूल रिसाली, भिलाई | 350 | 180 | 170 |
| 3. | के.पी.एस स्कूल, भिलाई | 140 | 080 | 060 |
| 4. | शकुंतला विद्यालय, रामनगर | 400 | 210 | 190 |
| 5. | संस्कार सिटी राजनांदगांव | 280 | 145 | 135 |

**सारणी क्रमांक 3.2:** विद्यालय में अध्ययनरत गैर छात्रावासी विद्यार्थियों (10+12) की संख्या

| विद्यालय में अध्ययनरत गैर छात्रावासी विद्यार्थियों (10+12) की संख्या | | | | |
|---|---|---|---|---|
| क्र. | विद्यालयों का नाम | गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संख्या | | |
| | | कुल संख्या | कुल छात्र | कुल छात्राएं |
| 1. | ए.पी.एस स्कूल, धनोरा | 140 | 90 | 50 |
| 2. | मैत्री विद्यानिकेतन स्कूल रिसाली, भिलाई | 400 | 225 | 175 |
| 3. | के.पी.एस स्कूल, भिलाई | 300 | 190 | 110 |
| 4. | शकुंतला विद्यालय, रामनगर | 350 | 220 | 80 |
| 5. | संस्कार सिटी राजनांदगांव | 250 | 180 | 120 |

## 3.5 प्रतिदर्श

भौतिक संसार के समाज की तरह सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक संसार भी व्यवस्थित है। उसमें निरंतरता है, क्रमबद्धता है, स्थिरता है, सांख्यिकी निरंतरता के नियम के अनुसार यदि एक व्यापक जनसंख्या में से कुछ न कुछ इकाईयों का संयोगिक आधार पर चयन किया जाए तो इस प्रकार चयन की गई इकाईयों का अध्ययन विश्वसनीय, पर्याप्त मात्रा में उपयुक्त तथा वैज्ञानिक रहता है। इन इकाईयों को न्यादर्श या प्रतिदर्श कहा जाता है।

न्यादर्श किसी अनुसंधान कार्य की आधारशिला है। यह आधारशिला जितनी शुद्ध होगी, अनुसंधान के परिणाम उतने ही विश्वसनीय तथा परिशुद्ध होंगे।

**गुड एवं हैड के अनुसारः** 'समस्त जनसंख्या का अध्ययन एक श्रमसाध्य कार्य है, इसलिए उसकी कुछ इकाईयों का चुनाव करके उनका अध्ययन किया जाता है, इसे ही न्यादर्श करते हैं।'

**पी.वी.यंग के अनुसारः** 'एक प्रतिदर्श अपने समस्त समूह का एक लघु चित्र होता है।'

प्रतिदर्श द्वारा अध्ययन के विभिन्न उद्देश्य हैः

- अध्ययन के उद्देश्यों को स्पष्ट करना।
- सार्थक तथा आवश्यक आंकड़ों का संकलन
- परिणामों की आवश्यक परिशुद्धता की मात्रा को पूर्ण निर्धारित करना।
- मापन विधि निर्धारित करना।
- निर्देश सूची की रचना करना।
- अध्ययन क्षेत्र का सकल रुप से संगठन करना।
- आंकड़ो का सारांश तथा विश्लेषण करना होता है।

प्रतिदर्श के प्रकारः

1. प्रसंभव्यता प्रतिदर्शन
    1. सामान्य यादृच्छिकी प्रतिदर्शन
    2. पुंजानुसार प्रतिदर्शन
    3. स्तरीकृत प्रतिदर्शन
    4. क्रमानुसार प्रतिदर्शन
    5. बहुस्तरीय प्रतिदर्शन
2. अप्रसंभाव्यता प्रतिदर्शन
    1. आकस्मिक प्रतिदर्शन
    2. उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन
    3. अंत प्रतिदर्शन
    4. निर्णित प्रतिदर्शन

उपरोक्त प्रकारों में से शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य के लिए उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा प्रतिदर्श का चयन किया।

### 3.5.1 प्रतिदर्श विधिः

प्रस्तुत लघु शोध कार्य में प्रतिदर्श का चुनाव उद्देश्य पूर्ण प्रतिदर्शन के आधार पर किया गया है। इस प्रतिदर्श की सहायता से शोधकर्ता ने अपना ध्यान समग्र में नष्ट न करके कुछ पर ही केन्द्रीत किया है, जिसमें विषय का गहन अध्ययन और समय की बचत होती है। इसके अतिरिक्त प्रतिदर्श की मानक त्रुटि भी कम हो जाती है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर अध्ययन का उल्लेख किया है। शोधकर्ता ने दुर्ग–भिलाई एवं राजनांदगांव में स्थित विद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन किया है।

दुर्ग–भिलाई एवं राजनांदगांव की प्रगति में शैक्षणिक संस्थाओं का योगदान है जहां पर कई छात्रावासी व गैर छात्रावासी शालाएं है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा 5 विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है, जिसमें छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

शोधकर्ता ने दुर्ग–भिलाई एवं राजनांदगांव क्षेत्र के छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालयों के विद्यार्थियों की संख्या की जानकारी करके उनमें से 320 छात्र एवं छात्राओं को अपने शोध कार्य करने के लिए यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया। इनमें 160 छात्रावासी विद्यार्थी है तथा 160 गैर छात्रावासी विद्यार्थी है।

**सारणी क्रमांक 3.3:** विद्यालयों में अध्ययनरत चयनित छात्रावासी विद्यार्थियों की संख्या

| विद्यालयों में अध्ययनरत चयनित छात्रावासी विद्यार्थियों की संख्या | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्र | विद्यालयों का नाम | छात्रावासी विद्यार्थियों की संख्या | | प्रतिदर्श | | प्रतिदर्श योग |
| | | छात्र | छात्राएं | छात्र | छात्राएं | |
| 1. | ए.पी.एस स्कूल, धनोरा | 090 | 70 | 16 | 14 | 030 |
| 2. | मैत्री विद्यानिकेतन स्कूल रिसाली, भिलाई | 180 | 170 | 18 | 18 | 036 |
| 3. | के.पी.एस स्कूल, भिलाई | 080 | 060 | 18 | 16 | 034 |
| 4. | शकुंतला विद्यालय, रामनगर | 210 | 190 | 16 | 12 | 028 |
| 5. | संस्कार सिटी राजनांदगांव | 145 | 135 | 18 | 14 | 032 |
| | | | | | योग | 160 |

**सारणी क्रमांक 3.4:** विद्यालयों में अध्ययनरत चयनित गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संख्या

| विद्यालयों में अध्ययनरत चयनित गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संख्या | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्र | विद्यालयों का नाम | गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संख्या | | प्रतिदर्श | | प्रतिदर्श योग |
| | | छात्र | छात्राएं | छात्र | छात्राएं | |
| 1. | ए.पी.एस स्कूल, धनोरा | 090 | 50 | 16 | 16 | 032 |
| 2. | मैत्री विद्यानिकेतन स्कूल रिसाली, भिलाई | 225 | 175 | 16 | 14 | 030 |
| 3. | के.पी.एस स्कूल, भिलाई | 190 | 110 | 14 | 10 | 024 |
| 4. | शकुंतला विद्यालय, रामनगर | 220 | 80 | 28 | 12 | 040 |
| 5. | संस्कार सिटी राजनांदगांव | 180 | 120 | 18 | 16 | 034 |
| | | | | | योग | 160 |

## 3.6 उपकरण

मानव के वर्तमान जीवन में उपकरण शब्द अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही वह माध्यम है, जिसकी सहायता से मानव अपने समस्त लक्ष्यों की प्राप्ति सुगमता के साथ करता है। जहां मानव के लक्ष्य साध्य है। तो उपकरण उसके साधना अनुसंधान में उपकरण का वहीं महत्व है, जो युद्ध में हथियारों का परिवहन में वाहनों का, भोजन में लवण का तथा अध्ययन में पुस्तक का अर्थात मानव का लक्ष्य चाहे वह छोटा लक्ष्य हो

अथवा बड़ा सभी को उपकरणों की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार से अनुसंधान कार्य से भी मानव को विविध उपकरण तथा तकनीकियों कि आवश्यकता होती है।

अनुसंधान के अंतर्गत समस्या निर्धारण, परिकल्पना करने, न्यादर्श चुनने के पश्चात् विभिन्न समंको, उपकरण की आवश्यकता पड़ती है। एक अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान की आवश्यकता होती है, जिसे वह विभिन्न रुप से पूर्ण करता है।

### 3.6.1 उपकरण की व्याख्या

शोधकर्ता का प्रोजेक्ट विषय 'छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

संवेगात्मक बुद्धि स्तर व्यक्ति के परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की क्षमता तथा चिंतन मनन करने के मापन करने का एक आधुनिक एवं विश्वसनीय रुप है, जिसका प्रयोग विभिन्न चयन एवं अनुसंधान के क्षेत्र में बहुत किया जा रहा है। संवेगात्मक बुद्धि स्तर मापन के लिए मंगल द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रश्नावली की विशेषताओं के कारण एवं समस्या के अध ययन विषय के कारण ही प्रश्नावली इस लघु शोध अध्ययन के लिए उपयुक्त उपकरण है।

उपकरण के चयन के कुछ महत्वपूर्ण आधारः

अनुसंधान संबंधी आंकड़ों को प्राप्त करने के लिए उपकरणों का चयन करते समय निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है।

1. **उपकरण द्वारा उद्देश्य को पूरा करना:** उपकरण ऐसा हो जो उद्देश्य की पूर्ति करे, तथा उसके वांछित आंकड़े उपलब्ध हो सके।
2. **उपकरण की विश्वसनियता:** अध्ययन उपकरण ऐसा होना चाहिए जिससे दी गई समस्या के प्रति विभिन्न अवसरों पर दी गई परीक्षण प्राप्तांको के स्थितियों के अंतर्गत समान परिणाम उपलब्ध हो सके। वास्तव में प्राप्त परिणामों की विश्वसनियता वैज्ञानिक अनुसंधान की एक प्रमुख कसौटी है।
3. **उपकरण की वैधता:** एक अच्छे उपकरण की विशेषता होती है कि वह वैध हो व उसी बात का मापन करता हो जो हम प्राप्त करना चाहते हैं।
4. **इसके द्वारा वस्तुनिष्ठ परिणाम उपलब्ध होने चाहिए:** समस्या के अध्ययन के लिए ऐसे उपकरणों को चयनीकृत करना चाहिए जिससे वस्तुनिष्ठ परिणाम उपलब्ध हो, वस्तुनिष्ठता से तात्पर्य उपकरण को अंक देने एवं अंको का विश्लेषण पक्षपात विहीनता से है।
5. **व्यापकता:** अनुसंधान के लिए चुना गया उपकरण उस क्षेत्र से संबंधित हो जिस पर हम कार्य करना चाहते हैं।
6. **प्रमापीकरण:** जहां तक संभव हो सदैव प्रमाणीकृत उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए।
7. **मितव्ययी:** एक अध्ययन से संबंधित वही उपकरण अधिक उपयुक्त रहता है जो कि समय व धन संबंधी दृष्टिकोणों से मितव्ययी रहे। उक्त बातों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत लघु शोध के लिए आंकड़ों के संकलन हेतु प्रश्नावली का चयन उपकरण के रुप में उपयुक्त है।

### 3.6.2 उपकरण का प्रशासन

इस अध्ययन हेतु आंकड़ों के संग्रहण हेतु संवेगात्मक बुद्धि स्तर मापनी उपकरण का प्रयोग किया गया। प्रतिदर्श से परीक्षा लेने में सर्वप्रथम यह ध्यान रखा किः

1. चयन प्रक्रिया में प्रतिदर्श छात्र–छात्राओं से आत्मीय संबंध बनाने का प्रयास किया।
2. उन्हें इस परीक्षण के विषय में संक्षिप्त जानकारी दी।
3. प्रश्नपत्र वितरीत करके उन्हें ऊपर प्रथम पृष्ठ पर अपना नाम, आयु लिंग, विद्यालय का नाम आदि लिखने को कहा गया, तत्पश्चात उन्हें निर्देश ध्यानपूर्वक पढ़ने को कहा गया।
4. छात्रों के द्वारा इस परीक्षा का उद्देश्य पूछने पर उन्हें इसका उद्देश्य बताया गया, इस कार्य के लिए प्रत्येक शाला के प्राचार्य एवं शिक्षकगण की सहायता उल्लेखनीय सिद्ध हुई। संवेगात्मक बुद्धि स्तर मापनी में कुल प्रश्नों की संख्या 100 है।

### 3.6.3 परीक्षण का फलांकन

इस मापनी में कुल 100 प्रश्न दिए गए हैं, जो कि स्वप्रेरणा, स्व जागरुकता संवेगात्मक स्थिरता आदि से संबंधित है। प्रत्येक को ठीक से पढ़कर दिए गए विकल्प में से किसी एक पर सही का चिन्ह लगाना है। पूर्ण तथा सहमत के लिए 1 अंक दिए गए हैं व प्रत्येक को गिनकर कुल योग ज्ञात करना है। यह योग ही उसकी संवेगात्मक बुद्धि होगी।

### 3.6.4 चयन का मापदण्ड

शोधकर्ता द्वारा संवेगात्मक बुद्धि के मापन हेतु मंगल द्वारा निर्मित एम.ई.आई.आई. मापनी का प्रयोग निम्न कारणों से किया

गया है।

1. यह एक प्रारंभिक परीक्षण है।
2. इनकी भाषा सरल है।
3. विश्वसनीय एवं वैध है।
4. परीक्षण द्वारा समय की बचत होती है। अतः हमारे परीक्षण का विषय छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

## 3.7 आंकड़ो का सांख्यिकीय विश्लेषण

परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांको के आधार पर सार्थकता मान ज्ञात करने के लिए सांखिकीय मानो का प्रयोग किया गया है, जिसमें माध्यमान, मानक विचलन तथा टी मान की गणना की गई है।

1. मध्यमान या समानतर माध्य (Mean)

$$M = \frac{\sum X}{N}$$

जहां M = माध्य

$\Sigma x$ = प्राप्तांको का योग

N = कुल संख्या

2. प्रमाणिक विचलन (Standard Deviation)

$$SD \text{ or } \sigma = \sqrt{\frac{\sum d^2}{N}}$$

जहां ± = प्रमाणिक विचलन

$d^2$ = समान्तर माध्य से ज्ञात किए गए विचलनों का वर्ग

N = कुल पद

$$SEd \text{ or } \sigma = \sqrt{\frac{\sum X^2}{N} - \left(\frac{\sum X}{N}\right)^2}$$

जहां ± = प्रमाणिक विचलन

N = कुल संख्या का पद

$\Sigma x$ = प्राप्ताकों का योग

$\Sigma x^2$ = पद मूल्यों के वर्गों का योग

3. $$SDp = \sqrt{\frac{\sum X_1^2 + \sum X_2^2}{N_1 + N_2 - 2}}$$

जहां **SDp** = प्रमाणिक विचलन (पूल्ड)

$\Sigma x_1^2$ = प्रथम श्रेणी में प्राप्त विचलनों का वर्ग

$\Sigma x_2^2$ = द्वितीय श्रेणी में प्राप्त विचलनों का वर्ग

$N_1$ = प्रथम श्रेणी में कुल संख्या

$N_2$ = द्वितीय श्रेणी में कुल संख्या

4. **प्रामाणिक विचलन त्रुटि**

$$\mathbf{SE_D} = SDp \sqrt{\frac{N_1 + N_2}{N_1 \times N_2}}$$

जहां $N_1$ = प्रथम श्रेणी की कुल संख्या

$N_2$ = द्वितीय श्रेणी की कुल संख्या

$\mathbf{SE_D}$ = प्रामाणिक विचलन की त्रुटि

5. 'टी' मूल्य (T Value)

$$T = \frac{M_1 \sim M_2}{SE_d}$$

जहां $M_1$ = प्रथम श्रणा का मध्यमान

$M_2$ = द्वितीय श्रेणी का मध्यमान

T = टी मूल्य

$SE_D$ = प्रामाणिक विचलन की त्रुटि

6. स्वतंत्रयांश (Degree of Freedom)

**Df** = (N1 – 1) + (N2 – 1)

जहां **df** = स्वतंत्रयांश

$N_1$ = प्रथम श्रेणी का योग

$N_2$ = द्वितीय श्रेणी का योग

स्वतंत्रयांश को **df** से व्यक्त करते हैं। संवेगात्मक बुद्धि **"T" Value** निकालते है जहां प्रतिदर्श की संख्या 320 है।

_____XXXX_____

# अध्याय 04

## 4.0 प्रदत्तों की प्राप्ति, व्याख्या एवं विश्लेशण

## 4.1 भूमिका

**स्टविलप के अनुसारः** 'सांख्यिकीय एक ऐसा उपकरण है जिसका संबंध आंकिक तथ्यों के संग्रह एवं व्याख्या की विधियों से है'।

सांख्यिकी का अर्थ एक ऐसे विज्ञान से होता है जिसके द्वारा संख्यात्मक तथ्यों का संकलन विवेचन, विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है। सांख्यिकी का प्रयोग वर्तमान वस्तुस्थिति के बारे में विश्वसनीय गणना करने में तो होता है। इसके साथ–साथ भविष्य की स्थितियों के बारे में पूर्वानुमान करने के लिए भी होता है। आवर्तिक परिवर्तनों को ठीक रुप में समझाने के लिए सांख्यिकीय का उपयोग किया जाता है।

**लाविट के अनुसारः** 'सांख्यिकी वह विज्ञान है जो घटनाओं की व्याख्या, विवरण तथा तुलना के लिए संख्यात्मक तथ्यों का संकलन, वर्गीकरण तथा सारणीकरण करता है।'

**फर्ग्यूसन के अनुसारः** 'सांख्यिकी वैज्ञानिक कार्य प्रणाली की एक शाखा है जिसके द्वारा प्रयोग तथा सर्वेक्षणों के आधार पर' प्राप्त आंकड़ों का संकलन वर्गीकरण, वितरण तथा विवेचना की जाती है।

अनुसंधान मानव की प्रगति की ओर ले जाने में एक अति आवश्यक उपकरण है। क्रमबद्ध अनुशासन के अभाव में प्रगति का होना असंभव सा है।

**क्राफोर्ड के अनुसारः** 'अनुसंधान किसी समस्या के अच्छे समाधान के लिए क्रमबद्ध तथा विशुद्ध चिंतन एवं विशिष्ट उपकरणों के प्रयोग की एक विधि है।'

सभी प्रकार के अनुसंधान का लक्ष्य प्रगति तथा श्रेष्ठ जीवन का निर्माण करना है। जिस सीमा का व्यक्तियों के समाज का विकास करने के लिए अच्छी शिक्षा को मान्यता प्रदान की जा रही है, उसी सीमा तक शैक्षिक प्रयासों और नीतियों को समुन्नत करने के लिए आजकल शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान बढ़ते जा रहे हैं।

सांख्यिकीय अनुसंधान का मूल आधार है। यह वैज्ञानिक अध्ययन की वह कला तथा विज्ञान है जिसके अंतर्गत प्रायः पूर्व निश्चित लक्ष्य के आधार पर निष्कर्ष तथ्यों का परिणाम मापन अथवा आंकड़ों का संकलन, वर्गीकरण व विश्लेषण इस उद्देश्य से किया जाता है, ताकि प्राकृतिक व सामाजिक घटनाओं से विषय में अनुमानात्मक व तुलनात्मक ज्ञान व सामाजिक घटनाओं के विषय में अनुमानात्मक व तुलनात्मक ज्ञान उपलब्ध हो सके। पर्याप्त मात्रा में संबंधित घटनाओं के पारस्परिक संबंधों के विषय में वैज्ञानिक स्तर पर भविष्य कथन की क्षमता उपलब्ध हो सके। इस प्रकार सांख्यिकीय की आवश्यकता केवल आंकड़ों के विश्लेषण में ही नहीं बल्कि उनके संकलन में भी रहती है।

## 4.2 प्रदत्तों की व्याख्या एवं विश्लेषण

किसी शोध अध्ययन में अंतिम परिणीत प्रदत्तो की व्याख्या एवं विश्लेषण है। यही साधन है जो शोधकर्ता को एक निश्चित स्वरुप प्रदान करता है जिसकी सहायता से अनुसंधानकर्ता अपनी परिकल्पनाओं की पुष्टि तथा किसी नियम या मान्यता की सत्यता को सार्थक रुप से व्यक्त करता है।

प्रदत्तों के विश्लेषण का अर्थ है इसमें निहित तथ्यों या अर्थों का निर्धारित करने हेतु सारणी बद्ध विषय सामग्री का अध ययन करना। इसके अंतर्गत प्रस्तुत जटिल कारकों को खंडित

करके सरल अंशो में विभाजित करना एवं व्याख्या के उद्देश्य से उन अंशो को नवीन व्याख्या के संदर्भ में संयोजित करना होता है।

सांख्यिकीय रीतियां अनेक चरणों में पूर्ण होती है, आंकड़ों का संग्रहण, वर्गीकरण, सारणीयन, प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण, निर्वचन, पूर्वानुमान आदि प्राप्त आंकड़ों को क्रमबद्ध करते हैं तथा सांख्यिकीय पद्धति से विश्लेषण कर प्राप्त आंकड़ों की बनाई गई परिकल्पना से मिलान करते हैं, जिसमें हमारे शोध को एक नई दिशा मिल सके। इन विश्लेषणों के आधार पर ही अनुसंधान को दिशा प्राप्त होती है। वैज्ञानिक विश्लेषण अध्ययन के तथ्यों, परिणामों तथा वैज्ञानिक ज्ञान के संबंध की खोज करता है। आंकड़ों का विश्लेषण कर एक वैज्ञानिक निष्कर्ष पर पहुंचाना है तथा परिकल्पना के परीक्षण में सहायक होता है।

प्रस्तुत प्रोजेक्ट में शोधकर्ता द्वारा चयन की गई समस्या 'छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन' से संबंधित चर प्रमुख है। इस अध्ययन हेतु कुछ परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया एवं उसी परिकल्पना के विश्लेषण एवं विवेचना निम्नलिखित पंक्तियों में दर्शायी गयी है।

## 4.3 परिकल्पनाओं की पुष्टि

वर्तमान अध्ययन का विषय 'छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन' है। इस अध्ययन हेतु कुछ परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया एवं उसी परिकल्पना के विश्लेषण एवं विवेचना निम्नलिखित पंक्तियों में दर्शायी गई है।

उक्त परिकल्पना की सार्थकता के लिए दुर्ग–भिलाई एवं राजनांदगांव में स्थित छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों

की संवेगात्मक बुद्धि का परीक्षण मंगल द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण द्वारा किया गया।

**परिकल्पना $H_1$**

'छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।'

विभिन्न संबंधित आंकड़े निम्नलिखित सारणी में दर्शाए गए हैंः

**सारणी क्रमांक 4.1**ः छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी मान

| | विद्यार्थियों की संख्या | मध्यमान | प्रमाणिक विचलन | टी मान |
|---|---|---|---|---|
| | N | M | SD or σ | |
| छात्रावासी विद्यार्थी | 80 | 58.12 | 08.30 | t = 7.42 |
| गैर छात्रावासी विद्यार्थी | 80 | 61.23 | 12.45 | |

**df= 158, P < 0.05,** सार्थक

सारणी क्रमांक 4.1 से स्पष्ट है कि छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 58.12 व 61.23 है व प्रणामिक विचलन 8.30 तथा 12.45 है तथा दोनों के मध्य टी मूल्य का मान 7.42 प्राप्त हुआ है। जो स्वतंत्रता का अंश 158 पर सारणी मान से अधिक है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्रावासी व गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर है। गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि छात्रावासी विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है। अतः यह परिकल्पना निरस्त की जाती है।

**कारण**ः छात्रावासी विद्यार्थी अपने परिवार से दूर रहकर धन के मूल्य को समझते नहीं हैं। परंतु गैर छात्रावासी विद्यार्थी परिजनों के साथ रहकर धन के मूल्य को समझते हैं और व्यर्थ

खर्च नहीं करते हैं।

**परिकल्पना $H_2$**

'छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में काई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।'

**सारणी क्रमांक** 4.2: छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी मान

| | विद्यार्थियों की संख्या | मध्यमान | प्रमाणिक विचलन | टी मान |
|---|---|---|---|---|
| | **N** | **M** | **SD or σ** | |
| छात्रावासी छात्र | 80 | 57.90 | 11.82 | **t = 7.88** |
| गैर छात्रावासी छात्र | 80 | 63.97 | 12.18 | |

**df= 78, P < 0.05,** सार्थक

सारणी क्रमांक 4.2 से स्पष्ट है कि छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 57.90 व 63. 97 है व प्रणामिक विचलन 11.82 तथा 12.18 है तथा दोनों के मध्य टी मूल्य का मान 7.88 प्राप्त हुआ है। जो स्वतंत्रता का अंश 78 पर सारणी मान से अधिक है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्रावासी व गैर छात्रावासी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर है। गैर छात्रावासी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि छात्रावासी छात्रों की अपेक्षा अधिक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि गैर छात्रावासी छात्र, छात्रावासी छात्रों की अपेक्षा श्रेष्ठ होते हैं।

**कारण:** छात्रावासी छात्र अकेले रहकर नशीले पदार्थो का सेवन, मौज–मस्ती, वाद–विवाद में तल्लीन हो जाते हैं। जबकि गैर छात्रावासी छात्र अपने परिजनों के साथ बंदिशों में रहकर उग्र नहीं हो पाते।

**परिकल्पना $H_3$**

'छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नहीं पाया जाता।'

**सारणी क्रमांक** 4.3: छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी मान

| | विद्यार्थियों की संख्या | मध्यमान | प्रमाणिक विचलन | टी मान |
|---|---|---|---|---|
| | **N** | **M** | **SD or σ** | |
| छात्रावासी छात्राएं | 80 | 59.42 | 11.75 | **t = 1.21** |
| गैर छात्रावासी छात्राएं | 80 | 58.5 | 11.99 | |

**df= 78, P > 0.05,** सार्थक नही

सारणी क्रमांक 4.3 से स्पष्ट है कि छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 59.42 व 58.5 है व प्रणामिक विचलन 11.75 तथा 11.99 है तथा दोनों के मध्य टी मूल्य का मान 1.21 प्राप्त हुआ है। जो स्वतंत्रता का अंश 78 पर सारणी मान के लगभग बराबर है।

इसका तात्पर्य यह कि छात्रावासी व गैर छात्रावासी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नहीं होता है।

**कारणः** छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्राएं भावुक होने के कारण अपने संवेगों पर नियंत्रण रखती हैं।

**परिकल्पना $H_4$**

'छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नहीं पाया जाता।

**सारणी क्रमांक 4.4:** छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी मान

| | विद्यार्थियों की संख्या | मध्यमान | प्रमाणिक विचलन | टी मान |
|---|---|---|---|---|
| | **N** | **M** | **SD or σ** | |
| छात्रावासी छात्र | 80 | 57.90 | 12.27 | **t = 1.97** |
| छात्रावासी छात्राएं | 80 | 59.42 | 11.75 | |

**df= 78, P > 0.05,** सार्थक नही

सारणी क्रमांक 4.4 से स्पष्ट है कि छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 57.90 व 59.42 है व प्रणामिक विचलन 12.27 तथा 11.75 है तथा दोनों के मध्य टी मूल्य का मान 1.97 प्राप्त हुआ है। जो स्वतंत्रता का अंश 78 पर सारणी मान के लगभग बराबर है।

इसका तात्पर्य यह कि छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नहीं होता है।

**कारणः** छात्रावासी छात्र एवं छात्राएं मूल निवास से दूर रहकर एक जैसे वातावरण में रहते हैं। जिसके कारण दोनों की ही सोचने–समझने की शक्ति व भावनाएं सामान होती है।

**परिकल्पना $H_5$**

'गैर छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नहीं पाया जाएगा।'

**सारणी क्रमांक 4.5:** गैर छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी मान

| | विद्यार्थियों की संख्या | मध्यमान | प्रमाणिक विचलन | टी मान |
|---|---|---|---|---|
| | **N** | **M** | **SD or σ** | |
| गैर छात्रावासी छात्र | 80 | 63.97 | 12.14 | **t = 10.64** |
| गैर छात्रावासी छात्राएं | 80 | 58.5 | 11.99 | |

**df= 78, P > 0.05,** सार्थक

सारणी क्रमांक 4.5 से स्पष्ट है कि गैर छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 63.97 व 58.5 है व प्रणामिक विचलन 12.14 तथा 11.99 है तथा दोनों के मध्य टी मूल्य का मान 10.64 प्राप्त हुआ है। जो स्वतंत्रता का अंश 78 पर सारणी मान के अधिक है।

इसका तात्पर्य यह कि गैर छात्रावासी छात्र की संवेगात्मक बुद्धि गैर छात्रावासी छात्राओं से उच्च है।

**कारणः** गैर छात्रावासी छात्र एवं गैर छात्रावासी छात्राएं अपने निवास में परिजनों के साथ सामान वातावरण में रहते हैं। परंतु छात्र वर्ग स्वविवेक से अपनी भावनाओं को नियंत्रित करते हैं जबकि छात्राएं समान वातावरण में रहने के बावजूद अपनी भावनाओं को नियंत्रित नहीं कर पाती है।

## ग्लोबल निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का उददे्श्य छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना था। जिसके लिए मंगल द्वारा निर्मित परीक्षण इमोशोनल इन्टेलीजेन्स इन्वेंटरी आंकडों को एकत्रित किया गया। छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अंतर ज्ञात करने के लिए टी मान की गणना की गई। परिणाम यह प्रदर्शित करता हैं कि छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया है। गैर छात्रावासी विद्यार्थी छात्रावासी विद्यार्थियों की अपेक्षा संवेगात्मक बुद्धि में श्रेष्ठ होते हैं।

गैर छात्रावासी छात्र की संवेगात्मक बुद्धि पर प्राप्त परिणामों से स्पष्ट होता है कि गैर छात्रावासी छात्र, छात्रावासी छात्रों की अपेक्षा संवेगात्मक बुद्धि में उच्च होते हैं। छात्राओं के संबंध में प्राप्त परिणाम यह प्रदर्शित करते हैं कि छात्रावासी एवं

गैर छात्रावासी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नहीं होता। छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं में संवेगात्मक बुद्धि की दृष्टिकोण से कोई अंतर नहीं पाया जाता। किन्तु गैर छात्रावासी छात्र–छात्राओं के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया जाता है। गैर छात्रावासी छात्र, छात्राओं की अपेक्षा संवेगात्मक बुद्धि में श्रेष्ठ पाए जाते हैं।

_____XXXX_____

# अध्याय 05

# निष्कर्ष, सुझाव एवं अनुकरणीय अध्ययन

## 5.1 भूमिका

बालक राष्ट्र की धरोहर है समाज कि प्रारंभिक इकाई व देश का भविष्य है। बालक हमारी सभ्यता–संस्कृति को भविष्य में परिष्कृत और उन्नत करने का माध्यम है और कोई भी राष्ट्र व समाज उस समय उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है, जब उसमें रहने वाले बालक को उचित शिक्षा प्राप्त हो, जिससे देश व समाज के अनुरूप अपने अंतनिर्हित शक्ति का सम्पूर्ण विकास कर सकें।

शिक्षार्थियों की शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक क्षमताओं का ऐसा समन्वयात्मक संयोजन करना है, जिससे समाज और प्रकृति के साथ अंतः क्रिया में वह अपने सर्वतोन्मुखी विकास के साथ समायोजित हो सके। भारतीय समाज में भावत्मक और सौंदर्यात्मक विकास करने की कल्पना शिक्षा ने कभी नहीं की, यद्यपि राष्ट्रीय एकता समिति तथा भावात्मक एकता समिति ने इस बात की आवश्यकता पर बल दिया है कि शिक्षा के द्वारा बालक के अंदर सकारात्मक संवेगों का विकास किया जाना चाहिए और नकारात्मक संवेगों का दमन किया जाना चाहिए।

## 5.2 निष्कर्ष

1. 0.05 विश्वसनीय स्तर पर का टी मान 7.42 सार्थक अन्तर अधिक है। स्वतंत्रता संख्या 158 पर टी का मान 7 पर है अतः परिकल्पना निरस्त की जाती है। अर्थात छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर है।

2. 0.05 विश्वसनीय स्तर पर का टी मान 7.88 अधिक सार्थक अन्तर पाया गया। स्वातंत्रय संख्या 78 पर टी का मान 7.88 है अतः परिकल्पना निरस्त की जाती है। अर्थात छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर है।

3. गणना द्वारा टी का मान 1.21 प्राप्त हुआ जो 0.05 विश्वसनीय स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना सार्थक व स्वीकृत की जाती है अर्थात छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

4. 0.05 विश्वसनीय स्तर पर टी का मान 1.97 सार्थक पाया गया। स्वतंत्रय संख्या 78 पर टी का मान 1.95 है अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अर्थात छात्रावासी छात्रा एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अन्तर नहीं है।

5. 0.05 विश्वसनीय स्तर पर टी का मान 10.64 अधिक सार्थक अन्तर पाया गया है। स्वातंत्रय संख्या 78 पर टी का मान 10.64 है। अतः परिकरल्पना निरस्त की जाती है, अर्थात गैर छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर है।

## 5.3 सुझाव

1. बालकों के लिए शैक्षिक उद्देश्य को प्राप्त करना आवश्यक है। परिवार की आर्थिक या सामाजिक किसी भी स्थिति के कारण उनकी बुद्धि में बाधाएं आती है उन्हें दूर करना आवश्यक है।

2. सामान्य अभ्यास के साथ नैतिक मूल्यों को भी शिक्षा में स्थान दिया जाएगा, जिसमें विद्यार्थियों में प्रेम, दया, सहानुभूति और सामाजिक गुण का विकास हो सके।

3. छात्रावासी व गैर छात्रावासी विद्यार्थियों का शालेय वातावरण इस प्रकार हो कि सभी बालकों को समान अवसर प्राप्त हो।
4. शिक्षकों को समय–समय पर नवीन तकनीकियों से प्रशिक्षित किया जाए, ताकि वे विद्यार्थियों की विविधता के अनुरूप अध्ययन करा सके।
5. बुद्धि परीक्षण के आधार पर कक्षा स्तर का निर्धारण करने की व्यवस्था करनी चाहिए।
6. शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए विद्यालय में योग्य शिक्षकों की नियुक्ति की जावे।
7. वाद, विवाद, विचार, विमर्श, प्रश्नमंच, भाषण, स्पर्धा आदि का आयोजन कर विद्यार्थियों के मानसिक गुणों का विकास करना चाहिए।

## 5.4 भावी अध्ययन हेतु प्रस्तावित समस्याएं

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विभिन्न समूह के विद्यार्थियों की बुद्धि पर पढ़ने वाले प्रभाव का तुलानात्मक अध्ययन।
2. अनु. जाति, जनजाति एवं अ.पि.व. की विद्यार्थियों की बुद्धि के अन्तः सम्बंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
3. आदिमजाति कल्याण विभाग द्वारा संचालित शाला एवं स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा संचालित शाला के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलानात्मक अध्ययन ।
4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलानात्मक अध्ययन।
5. हाईस्कूल स्तर पर नवोदय विद्यालय, केंद्रिय विद्यालय एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का

तुलानात्मक अध्ययन।

6. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में आवासीय विद्यालय एवं गैर आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन।
7. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में आवासीय विद्यालय एवं गैर आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन।
8. उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर पर निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन।
9. शिक्षित व अशिक्षित पालकों के बच्चों के संवेगात्मक बुद्धि का तुलानात्मक अध्ययन।
10. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर तथा पूर्व माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन।
11. अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विभिन्न स्तरों के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

_____XXXX_____

# अध्याय 06

## 6.0 सारांश

## 6.1 भूमिका

शिक्षा समाज की आधारशिला है एवं समाजीकरण का एक साधन है जिसके द्वारा बालक समाजीकृत होता है। प्रारंभ में बालक की शिक्षा परिवार नामक संस्था द्वारा अनौपचारिक रूप से दी जाती है जो धर्म से संबंधित एवं अपनी परंपरा विचार तथा संस्कृति के अनुसार देते थे।

समाज के जिस प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था होगी, उसी प्रकार से समाज का निर्माण होगा। शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अच्छाईयों तथा बुराईयों में परख करता है तथा उचित तथ्यों को ग्रहण करता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगिण विकास करके राष्ट्र एवं विश्व की प्रगति में सहायक एवं कुशल नागरिक की शिक्षा प्रदान करना है। आजकल ही नही वरन आने वाले प्राचीन काल से शिक्षा शब्द का प्रयोग किसी न किसी अर्थ में होता चला आया है। बालकों की क्षमता का विकास बुद्धि के द्वारा होता है। शिक्षा के द्वारा ही सामाजिक तथा भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में बुद्धि तथा उसकी मापन प्रक्रिया का अत्याधिक महत्व है।

## 6.2 अध्ययन का महत्व

शिक्षा के दो अर्थ है एक व्यापक तथा दूसरा संकुचित व्यापक अर्थ में शिक्षा संपूर्ण जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। प्रत्येक अनुभव शिक्षा और प्रत्येक समूह उनका शिक्षक है। किन्तु सामाजिक अर्थ में समाज द्वारा नियोजित शिक्षा संस्थाओं में हमारे पूर्वजों की संचित धनराशि में से जो सीखता है वह शिक्षा है। पुस्तके और पाठ्यक्रम उसकी सीमायें है तथा इसका

सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का प्रसारण तथा बालक का उससे तादात्म्यकरण स्थापित करना है।

शिक्षा समाज की आधारशिला है। समाज में जिस प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था होगी, उसी प्रकार के समाज का निर्माण होगा इसी बात को ध्यान में रखकर विभिन्न विचारकों से विभिन्न कालों में शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों पर बल दिया है। उदाहरणार्थ प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्यों का विकास करना है, मुस्लिम शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सिद्धांतो, कानूनों और मुस्लिम सामाजिक परंपराओं को अंग्रेजी जानने और न जानने वाले दो ऐसे वर्गो में विभाजित करना था, जो सदैव एक दूसरे से घृणा करते थे। इसी प्रकार अन्य देशो में भी समय–समय पर शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य रहे।

परिवार ही समाज की प्रारंभिक इकाई है। परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है। सर्वप्रथम वह परिवार से ही सीखनें की प्रक्रिया शुरू करता है। बालक की पारिवारिक देशभाल व उसके शैक्षणिक स्तर पर परिवार द्वारा प्राप्त आय और व्यय आर्थिक स्थिति उच्च स्तर की होती है, उन परिवारों के बालकों में बुद्धि भी ऊंचे स्तर की पायी गयी है। आय के साथ–साथ रहन–सहन का स्तर ऊंचा एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर निर्भर करता है। मनोवैज्ञानिकों ने देखा है कि जो बच्चे अच्छे परिवारों के होते है वे भाषा वाक्यों आदि के क्षेत्र में उच्च होते है।

## 6.3 संवेग

मानव जीवन में संवेगों का अत्याधिक महत्व है। यदि संवेगो का विकास संतुलित रूप में नहीं होता है तो व्यक्ति का संपूर्ण व्यक्तित्व विघटित हो जाता है।

गिलफोर्ड के अनुसार संवेगो के प्रकारः

**संवेग**

| प्राथमिक | द्वितीयक |
|---|---|
| आनंद | प्रेम |
| भय | भय, विस्मय |
| आश्चर्य | पश्चाताप |
| क्रोध | तिरस्कार |
| घृणा | आशावाद |
| दुख (शोक) | निराशा |
| स्वीती | आज्ञाकारी |
| पूर्वाभास | पूर्वानुमान |

## 6.4 बुद्धि

बुद्धि व्यक्ति की वह क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने वातावरण के प्रति अनुक्रिया करता है। वह वातावरण तथा परिस्थातियों में स्वयं को समायोजित करता है या स्वयं वातावरण के अनुकूल बन जाता है।

विभिन्न विद्वानों ने बुद्धि का वर्गीकरण इस प्रकार किया हैः

**बुद्धि**

- गैरेट के अनुसार
  - मूर्त
  - अमूर्त
  - सामाजिक
- थार्नडाइक के अनुसार
  - अमूर्त
  - सामाजिक
  - यांत्रिकी बुद्धि

आधुनिक समय में बुद्धि के प्रकारों में संवेगात्मक बुद्धि तथा आध्यात्मिक बुद्धि को भी सम्मिलित किया गया है।

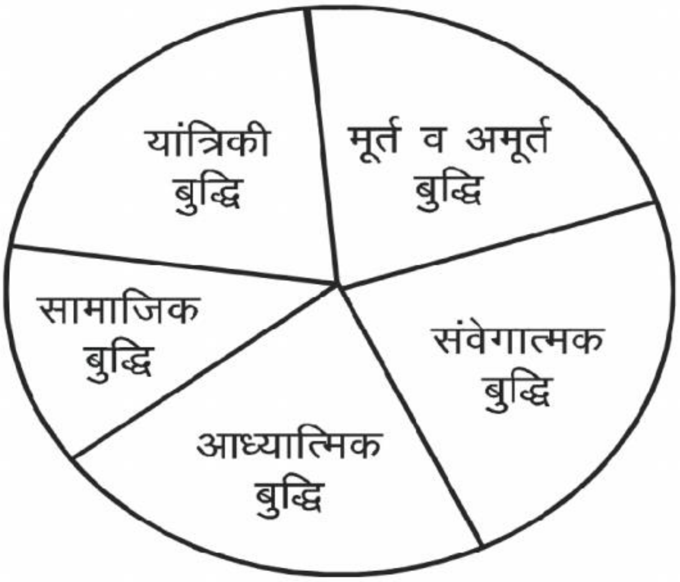


## 6.5 संवेगात्मक बुद्धि की आवधारणा

संवेगात्मक बुद्धि एक नई अवधारणा है जो डेनियल गोलमन द्वारा विकसित की गई है। यह व्यक्ति की वह क्षमता होती है जो संवेगों का शोध कराये तथा विचारों के अनुसार उसे संचालित करें तथा संवेगात्मक ज्ञान प्रदान करें।

संवेगात्मक बुद्धि = संवेग + बुद्धि

### 6.5.1 संवेगात्मक बुद्धि के तत्व

1. अभिप्रेरणा
2. समानुभूति
3. स्व–जागरूकता
4. स्व–प्रकटीकरण
5. निश्चयता
6. संबंधों में कुशलता

### 6.5.2 संवेगात्मक बुद्धि का प्रयोग

1. कार्यस्थल पर संवेगात्मक बुद्धि
2. स्वस्थ संबंधों का निर्माण
3. अभिभावकों में संवेगात्मक बुद्धि
4. संवेगात्मक बुद्धि व किशोरावस्था
5. अभिभावकों में संवेगात्मक बुद्धि
6. लक्ष्य निर्धारण

### 6.5.3. संवेगात्मक बुद्धि का अभाव

1. सामाजिक समस्या
2. चिन्ता व हीन भावना
3. अपराधी या आक्रामक
4. विचारों की समस्या

6.5.4. संवेगात्मक बुद्धि अधिगम

1. स्वयं की पहचान
2. भावों के कारणों की पहचान
3. आत्म नियंत्रण
4. क्रोध और भय में व्यवहार
5. सकारात्मक सोच का विषय

## 6.6 समस्या कथन

'छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन'

समस्या के चयन के पश्चात यह आवश्यक हो जाता है कि जिन धारणाओं पर समस्या आधारित है, उन्हीं धारणाओं के अनुसार परिकल्पनाओं का निर्माण, जो प्रयोग एवं अनुसंधान के

द्वारा सत्यता सिापित कर सके। इस प्रकार से ये विभिन्न समस्या के समाधान तक पहुंचने के लिए उपयुक्त मार्ग एवं साध ान सिद्ध होते है।

## 6.7 संक्रियात्मक परिभाषा

### 6.7.1 छात्रावासी

वे विद्यार्थी जो अध्ययन ग्रहण करने हेतु परिवार से दूर विद्यालय प्रांगण में निवास करते हैं, ऐसे विद्यार्थी इस संज्ञा में सम्मिलित हैं।

### 6.7.2 गैर छात्रावासी

वे विद्यार्थी जो अध्ययन ग्रहण करने हेतु सर्वसुविधायुक्त आवासीय व्यवस्था में परिजनों के साथ रहकरष्शैक्षणिक संस्थाओं में शिक्षा ग्रहण करते हैं, ऐसे विद्यार्थी इस संज्ञा में सम्मिलित हैं।

### 6.7.3 संवेगात्मक बुद्धि

संवेगात्मक बुद्धि द्वारा व्यक्ति संवेगों पर नियंत्रण रखकर मानवीय संबंधों को बुद्धिमानी से क्रियान्वयन करता है।

प्रस्तुत अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धि का तार्त्पय मंगल द्वारा निर्मित एमईआईआई संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण मापनी द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमान से है।

## 6.8 अध्ययन का उद्देश्य

प्रत्येक कार्य किसी न किसी उद्देश्य से प्रेरित होता है। जिन कार्यो का उद्देश्य निश्चित होता है। उनमें व्यक्ति की सफलता की संभावना अच्छी रहती है, किन्तु यदि किसी कार्य का उद्देश्य निश्चित नहीं है तो कार्य करने वाला उसमें पूरी तरह रूचि ले सकेगा और न ही कार्य उचित ढंग से पूरा हो पायेगा।

प्रस्तुत समस्या के उद्देश्य निम्न प्रकार हैः

1. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर ज्ञात करना।
2. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर ज्ञात करना।
3. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर ज्ञात करना।
4. छात्रवासी छात्र एवं एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर ज्ञात करना।
5. गैर छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर ज्ञात करना।

## 6.9 अध्ययन की परिकल्पना

$H_1$ छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।

$H_2$ छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नहीं पाया जाता।

$H_3$ छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नहीं पाया जाता।

$H_4$ छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नहीं पाया जाता।

$H_5$ गैर छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नहीं पाया जाता।

## 6.10 अध्ययन की परिसीमा

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल दुर्ग एवं राजनांदगांव जिले तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का ही अध्ययन किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन केवल 5 विद्यालय के विद्यार्थियों तक ही सीमित है।

न्यादर्श के अंतर्गत 320 विद्यार्थी ꠰160 छात्र एवं 160 छात्राएंꠠ का चयन किया गया है। संवेगात्मक बुद्धि का मापन मंगल द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी द्वारा किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धि मापन हेतु मंगल द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी के लिए कक्षा 10 वीं से 12वीं के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

## 6.11 जनसंख्या

जनसंख्या से तात्पर्य शोध कार्य के लिए उपलब्ध विद्यार्थियों की संख्या से है। प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के अंतर्गत कक्षा 10 वीं से 12वीं में अध्ययनरत समस्त छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थी हैं।

## 6.12 प्रतिदर्श

प्रस्तुत प्रोजेक्ट कार्य में प्रतिदर्श का चुनाव दुर्ग–भिलाई एवं राजनांदगांव में स्थित सभी छात्रावासी व गैर छात्रावासी विद्यालयों में से 5 विद्यालयों का चयन किया गया है। कुल 320 विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिसमें 160 छात्रावासी व 160 गैर छात्रवासी विद्यालयों के विद्यार्थी है।

## 6.13 शोध प्रारुप

चर

| स्वतंत्र चर | परतंत्र चर |
|---|---|
| 1. छात्रावास / गैर छात्रावास | 1. संवेगात्मक बुद्धि |
| 2. लिंग–छात्र एवं छात्राएं | |

## 6.14 शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में सामग्री प्राप्त करने हेतु सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया जाता है। सर्वेक्षण से तात्पर्य ऐसे अध्ययनों से है जिसमें कि अनुसंधानकर्ता किसी विशेष स्थान पर जाकर कुछ अवस्थाओं या परिस्थितियों से संबंधित सही सूचनाओं का संकलन करता है। मंगल कि संवेगात्मक बुद्धि मापनी द्वारा छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के आंकड़े प्राप्त किए गए हैं। छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी समूहों के मध्य टी–मूल्य द्वारा अंतर ज्ञात किया गया है। लिंग का प्रभाव देखने हेतु छात्र एवं छात्राओं के मध्य टी–मूल्य की गणना की गई है।

## 6.15 उपकरण

मानव के वर्तमान जीवन में 'उपकरण' शब्द अत्याधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही वह माध्यम है, जिसकी सहायता से मानव अपने समस्त लक्ष्यों की प्राप्ति सुगमता के साथ करता है।

अनुसंधान के अंतर्गत समस्या निर्धारण परिकल्पना करने, न्यादर्श चुनने के पश्चात्, विभिन्न समंको (उपकरण) की आवश्यकता पड़ती है। एक अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान की आवश्यकता होती है, जिसे वह विभिन्न रूप में पूर्ण करता है।

शोधकर्ता के लघु शोध विषय 'छात्रावासी व गैर छात्रावासी विद्यार्थियों को संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना है'।

संवेगात्मक बुद्धि स्तर व्यक्ति के परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की क्षमता तथा चिंतन मनन करने के मापन करने का एक आधुनिक एवं विश्वसनीय रूप हैं, जिसका प्रयोग विभिन्न चयन एवं अनुसंधान के क्षेत्र में बहुत किया जा रहा है।

संवेगात्मक बुद्धि स्तर मापन के लिए मंगल द्वारा निर्मित एम.ई. आई.आई. (मंगल इमोशनल इंटलिजेन्स इन्वोटरी ) मापनी का प्रयोग किया गया है।

## 6.16 निष्कर्ष

**परिकल्पना $H_1$**

निष्कर्ष : **$df = 158$, $t = 7.42$, $p < 0.05$**, सार्थक

अर्थात् छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि मे सार्थक अंतर पाया जाता है।

**परिकल्पना $H_2$**

निष्कर्ष : **$df = 78$, $t = 7.88$, $p < 0.05$,** सार्थक

अर्थात् छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि मे सार्थक अंतर पाया जाता है।

**परिकल्पना $H_3$**

निष्कर्ष : **$df = 78$, $t = 1.21$, $p > 0.05$,** सार्थक नहीं

अर्थात् छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि मे कोई अंतर नहीं पाया जाता है।

**परिकल्पना $H_4$**

निष्कर्ष : **df = 78, t = 1.97, p > 0.05,** सार्थक नहीं

अर्थात् छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि मे कोई अंतर नहीं पाया जाता है।

**परिकल्पना $H_5$**

निष्कर्ष : **df = 78, t = 10.64, p > 0.05,** सार्थक

अर्थात् गैर छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया जाता है।

_____XXXX_____

# संदर्भ ग्रंथ सूची (Annexure-I)


- भटनागर एवं भटनागर (2005) : शैक्षिक एवं मानसिक मापन, आर लाल बुक डिपो, मेरठ
- कुलश्रेष्ठ, सिंह एवं राम (2005) : अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा
- भटनागर, भटनागर एवं भटनागर : शिक्षा मनोविज्ञान, (2005) आर लाल बुक डिपो, मेरठ पृ.सं.— 181,182
- लाल एवं पलोड (2006) : शैक्षिक चिंतन एवं प्रयोग आर लाल बुक डिपो, मेरठ पृ.सं.— 01, 04, 05
- वशिष्ठ : शिक्षा मनोविज्ञान, (2007) अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली पृ.सं.— 70, 71
- मंगल एवं पाठक (2009) : अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ.सं.— 202, 203
- मंगल एवं मंगल (2011) : विद्यार्थी विकास एवं शिक्षा अधिगम प्रक्रिया, लायल बुक डिपो, मेरठ, पृ.सं.— 93
- माथुर (1994) : शिक्षण कला विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. सं.— 89, 90, 93, 94
- पचौरी (2007) : शिक्षा और समाज, लायल बुक डिपो, मेरठ, पृ.सं.— 1, 3
- सुखिया मेहरोत्रा एवं मेहरोत्रा (1970) : शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ.सं.— 152, 156
- सिंह, शर्मा एवं रावत (2009) : अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण, अधिगम प्रक्रिया, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा, पृ.सं.— 174, 175
- शर्मा (2003) : शिक्षा और मनोविज्ञान में प्रारंभिक सांख्यिकी सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, पृ.सं.— 167, 168

- शर्मा (2012) : शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, लायल बुक डिपो, मेरठ, पृ.सं.– 23, 173
- गुप्ता एवं गुप्ता (2014) : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शरद पुस्तक भवन, इलाहबाद, पृ.सं.– 181,182
- माथुर (2013–14) : शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा–2
- पाठक (2013–14) : शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा–2, पृ.सं.– 415
- Abraham Carmeli : Halevy, Jacob Weisberg Meyrav titzhak Journal of Managerial Psychology (2009)] Volume -24, issue-1 page-66-78
- Aurora.(2012) : Praachi Journal of Psycho-Cultural Dimensions VoI.42(21), p-59-61
- Bhargava.(2012) : psycho-lingua, VoI.42(21), p-59-61
- Bhargava.(2012) : Behavioural Scientist (Bi-annual), VoI.13(2), p-195-197
- Bhargava.(2012) : Behavioural Scientist (Bi-annual), VoI.13(1), p-150-152
- Bhargava.(2012) : psycho-lingua, VoI.42(2), p-150-152
- Emmaj. Donaldso: British Journal of guidance & counseling volume fielder, frank W. Bond 32, issu 2 may 2004, Page 5-187-203
- Goleman d (1995) : E.\. Bantam Book, Publishing history
- George, J.M.(2000) : Emotions and leadership; The

role of E.I “Human relations, VoI.53(8), p-1027-1055

- Nicola, John, Wendary, Greta (2001) : E.l.and Inter personal relation Journal of social Psychology, Vol(4)P-5:23-36
- Nicola, John, Wendary, Greta (2001) : E.l.and Inter personal relation Journal of social Psychology, Vol(4)P-5:23-36
- Ramalingam.(2012) : Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, VoI.42(2), p-51-65
- Sakivey, P. and Mayer J.D. (1990) : Emotional lnteligence, Imagination, Cognition and personality Page-185-211
- Singh.(2012) : Indian Journal of Psychometry and Education, VoI.43(1), p-13-16
- Yadav.(2012) : Journal of Education & Psychological Research, VoI.42(2), p-87-89

_____XXXX_____

## शब्दावली (Annexure-II)

| | |
|---|---|
| Aim | – उद्धेश्य |
| Address | – संबोधन |
| Allowable | – स्वीकार्य |
| Average | – औसत |
| Analysis | – विश्लेशण |
| Administration | – प्रशासन |
| Ambission | – महत्वाकांक्षा |
| Aspiration | – आकांक्षा |
| All Round | – सर्वांगीण |
| Conclusion | – निष्कर्ष |
| Curriculum | – पाठ्यक्रम |
| Coincious | – संचेतन |
| Capacity | – क्षमता |
| Curiosity | – जिज्ञासा |
| Child | – बालक |
| Cultural | – सांस्कृतिक |
| Data | – प्रदत्त |
| Degree of Freedon | – स्वतंत्रता के घटक |
| Delimitation | – परिसीमा |
| Difference | – अंतर |

| | |
|---|---|
| Experience | – अनुभव |
| Education | – शिक्षा |
| Education Experience | – शैक्षिक अनुभव |
| Environment | – पर्यावरण |
| Emotional Tendency | – संवेगात्मक प्रवषत्ति |
| Education Interest | – शैक्षिक रूचि |
| Emotion | – संवेग |
| Erore | – त्रुटि |
| Factor | – कारक |
| Frustration | – निराशा |
| Hypothesis | – परिकल्पना |
| Item Analysis | – पद–विश्लेशण |
| Interest | – रूचि |
| Inteligence | – बुद्धिमता |
| Importance | – महत्व |
| Instruments | – उपकरण |
| Introducation | – प्रस्तावना |
| Interpretation | – व्याख्या |
| Investigator | – अनुसंधान |
| Level | – स्तर |
| Mean | – मध्यमान |

| | |
|---|---|
| Methodology | – विधि तंत्र |
| Method | – विधि |
| Measurment | – मापन |
| Need | – आवश्यकता |
| Negative | – ऋणात्मक |
| Psychology | – मनोवैज्ञानिक |
| Positive | – धनात्मक |
| Problem | – समस्या |
| Price | – मूल्य |
| Reference | – संदर्भ |
| Personal | – व्येक्तिक |
| Population | – जनसंख्या |
| Rank | – अनुक्रम |
| Research | – अनुसंधान |
| Related Study | – संबंधित अध्ययन |
| Resulte | – परिणाम |
| Sample | – प्रतिदर्श |
| Scening | – फलांकन |
| Significance | – सार्थकन |
| Standard Deviation | – मानक विचलन |
| Scope& | {ks= foLrkj |

| | |
|---|---|
| Statement of Problem | – समस्या का परिभाशीकरण |
| Summary | – सारांश |
| Society | – समाज |
| Social Intelligence | – सामाजिक बुद्धि |
| Scoring Key | – फलांकन कुंजी |
| Studies Followup | – अनुकरणीय अध्ययन |
| Suggestion | – सुझाव |
| Strategies | – स्तरीकष्त |
| Scientific Method | – वैज्ञानिक पद्धति |
| Tools | – उपकरण |
| Techniques | – प्रविधि |
| Teaching | – शिक्षण |
| Universe | – सार्वभौम |
| Variable | – चर |
| Validity | – वैधता |

_____XXXX_____

Hostler Boys ①

11/12 **Answer Sheet**

Total of =16

T. M. Regd. No. 504038
Copyright Regd. No. S.A T5256/2003 Dt. 3.6.05

**E I I-MM**

**Dr. S. K. Mangal** *(Rohtak)*
**Dr. Shubhra Mangal** *(Noida)*

*(English / Hindi version)*

***Please fill up the following informations (कृपया निम्न सूचनाएँ भरिये) :—***

Name (नाम) Shubham Mishra

Class (कक्षा) XII Date of Birth (जन्म-तिथि) 02-01-1997

Age (आयु) 17 Sex (लिंग) Male

School (विद्यालय) Krishna Public School.

Date (दिनांक) 12-07-14

**SCORING TABLE (फलांकन तालिका)**

| AREA | I | II | III | IV | Total Score | Overall Interpretation |
|---|---|---|---|---|---|---|
| SCORE | 13 | 11 | 11. | 14 | (59) | |
| Interpretation Areawise | | | | | | |

**Estd. 1971** ✆ : (0562) 2464926

**NATIONAL PSYCHOLOGICAL CORPORATION**

**4/230, KACHERI GHAT, AGRA-282 004 (INDIA)**

* Check

| PART – I | | | PART – I | | | PART – I | | | PART – I | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Q. No. क्रमांक | ANSWER Yes हाँ | No नहीं | Q. No. क्रमांक | ANSWER Yes हाँ | No नहीं | Q. No. क्रमांक | ANSWER Yes हाँ | No नहीं | Q. No. क्रमांक | ANSWER Yes हाँ | No नहीं |
| 1 | ☑ | ☐ | 26 | ☑ | ☐ | 51 | ☑ | ☐ | 76 | ☑ | ☐ |
| 2 | ☐ | ☑ | 27 | ☐ | ☑ | 52 | ☐ | ☑ | 77 | ☐ | ☑ |
| 3 | ☐ | ☑ | 28 | ☐ | ☑ | 53 | ☐ | ☑ | 78 | ☑ | ☐ |
| 4 | ☐ | ☑ | 29 | ☐ | ☑ | 54 | ☐ | ☑ | 79 | ☐ | ☑ |
| 5 | ☐ | ☑ | 30 | ☐ | ☑ | 55 | ☐ | ☑ | 80 | ☑ | ☐ |
| 6 | ☐ | ☑ | 31 | ☑ | ☐ | 56 | ☑ | ☐ | 81 | ☑ | ☐ |
| 7 | ☐ | ☑ | 32 | ☑ | ☐ | 57 | ☑ | ☐ | 82 | ☑ | ☐ |
| 8 | ☑ | ☐ | 33 | ☑ | ☐ | 58 | ☐ | ☑ | 83 | ☐ | ☑ |
| 9 | ☑ | ☐ | 34 | ☑ | ☐ | 59 | ☑ | ☐ | 84 | ☐ | ☑ |
| 10 | ☐ | ☑ | 35 | ☑ | ☐ | 60 | ☐ | ☑ | 85 | ☑ | ☐ |
| 11 | ☑ | ☐ | 36 | ☐ | ☑ | 61 | ☑ | ☐ | 86 | ☐ | ☑ |
| 12 | ☑ | ☐ | 37 | ☐ | ☑ | 62 | ☐ | ☑ | 87 | ☑ | ☐ |
| 13 | ☐ | ☑ | 38 | ☐ | ☑ | 63 | ☑ | ☐ | 88 | ☐ | ☑ |
| 14 | ☑ | ☐ | 39 | ☐ | ☑ | 64 | ☐ | ☑ | 89 | ☑ | ☐ |
| 15 | ☑ | ☐ | 40 | ☐ | ☑ | 65 | ☑ | ☐ | 90 | ☐ | ☑ |
| 16 | ☐ | ☑ | 41 | ☐ | ☑ | 66 | ☑ | ☐ | 91 | ☑ | ☐ |
| 17 | ☑ | ☐ | 42 | ☑ | ☐ | 67 | ☑ | ☐ | 92 | ☐ | ☑ |
| 18 | ☐ | ☑ | 43 | ☐ | ☑ | 68 | ☐ | ☑ | 93 | ☐ | ☑ |
| 19 | ☐ | ☑ | 44 | ☑ | ☐ | 69 | ☑ | ☐ | 94 | ☐ | ☑ |
| 20 | ☐ | ☑ | 45 | ☐ | ☑ | 70 | ☑ | ☐ | 95 | ☐ | ☑ |
| 21 | ☐ | ☑ | 46 | ☑ | ☐ | 71 | ☐ | ☑ | 96 | ☑ | ☐ |
| 22 | ☐ | ☑ | 47 | ☐ | ☑ | 72 | ☑ | ☐ | 97 | ☑ | ☐ |
| 23 | ☑ | ☐ | 48 | ☐ | ☑ | 73 | ☑ | ☐ | 98 | ☐ | ☑ |
| 24 | ☑ | ☐ | 49 | ☑ | ☐ | 74 | ☑ | ☐ | 99 | ☑ | ☐ |
| 25 | ☑ | ☐ | 50 | ☑ | ☐ | 75 | ☐ | ☑ | 100 | ☑ | ☐ |
| TOTAL = | 03 | 10 | TOTAL = | 03 | 08 | TOTAL = | 11 | 0 | TOTAL = | 06 | 08 |

Check *

©2012 All rights reserved. Reproduction in any form is a violation of Copyright Act
Answer Sheet of Emotional Intelligence Inventory (EII-wv) English/Hindi Version

3 10 3 08 11 0 06 08

REUSABLE BOOKLET

OF

# Mangal Emotional Intelligence Inventory

# (M E I I)

**[ Hindi Version ]**

**Dr. S. K. Mangal**
*Guest Faculty*
*Department of Education*
*M. D. University*
ROHTAK

**Mrs. Shubhra Mangal**
*Principal*
*C. R. S. College of Education*
NOIDA

Estd. 1971

✆ (0562) 2464926

**NATIONAL PSYCHOLOGICAL CORPORATION**
4/230, KACHERI GHAT, AGRA - 282 004 (INDIA)

# निर्देश

शिक्षा और मनोविज्ञान के क्षेत्र में होने वाले नवीनतम अनुसंधानों से यह जानकारी मिली है कि जीवन में आगे बढ़ने तथा ठीक तरह समायोजित होने में व्यक्ति की संवेगात्मक बुद्धि का बहुत अधिक हाथ रहता है। अब आपको यह जानने की अवश्य ही जिज्ञासा होगी कि आपकी संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence) का स्तर क्या है ? यह जानने के लिये आप आगे दिये गये कथनों को ध्यान से पढ़कर उत्तर दीजियेगा। आप बिना किसी संकोच के अपने उत्तर देने का प्रयत्न करें तथा निश्चिन्त रहें कि आपके उत्तर पूरी तरह से गुप्त रखे जायेंगे। कृपया उत्तर देने में निम्न बातों का ध्यान रखें।

1. आपको एक परीक्षण पुस्तिका (Test Booklet) तथा एक उत्तर पत्र (Answer Sheet) दिया जा रहा है। इस समय आप जो पढ़ रहे हैं वह परीक्षण पुस्तिका ही है। इसके मुख पृष्ठ पर निर्देश है तथा शेष पृष्ठों में 100 कथन हैं। आपको इन सभी कथनों के उत्तर हाँ या ना मे देने है। उत्तर देने हेतु आपको अलग से एक उत्तर पत्र दिया जा रहा है जिसमें 1 से लेकर 100 कथनों के क्रमांक लिखे हैं। प्रत्येक कथन के क्रमांक के सामने दो विकल्प **हाँ** तथा **नहीं** दिये हुए हैं। आपको उत्तर देने हेतु **हाँ** **(Yes)** या **नहीं** **(No)** में से किसी एक विकल्प का चुनाव करके उस वाले कोष्ठक पर सही का निशान [V] लगायें।

2. ध्यान रखें कि किसी भी कथन का यहाँ कोई गलत या सही उत्तर नहीं है। ये सभी प्रश्न आपकी संवेगात्मक बुद्धि के स्तर की जाँच करने के लिये हैं। अतः आप जैसा प्रश्न को देखते हुये अपने लिये उचित समझते हों उसके अनुसार **हाँ** या **ना** में उत्तर दीजिये। कोई प्रश्न उत्तर देने से छूट न जाये इस बात का विशेष ध्यान रखें नही तो आपकी संवेगात्मक बुद्धि के स्तर की जाँच अधूरी रह जाएगी।

3. इस बात का भी पूरा ध्यान रखें कि आपको प्रश्न पत्र (Test Booklet) पर कुछ नहीं लिखना है। अपने सभी उत्तर, उत्तर पत्र पर ही कथन क्रमांकों के आगे लिखे **हाँ** या **नहीं** वाले कोष्ठक पर सही का निशान [V] लगाकर देने हैं।

4. यद्यपि समय की कोई सीमा नहीं है परन्तु फिर भी आप अपना कार्य 30-40 मिनट में ही पूरा करने का प्रयत्न कीजिये।

5. यदि अब आपको कोई बात और पूछनी है तो पूछ लें और अपना कार्य जल्दी ही शुरू कर दें।

| क्रमांक | कथन |
|---|---|

**भाग - 1**

1. क्या आप अपने को दुर्बल मन का व्यक्ति मानते हैं ?
2. क्या आप बहुत बार आपे से बाहर हो जाते हैं ?
3. क्या आपको लगता है कि आपकी जिन्दगी में दुखों का अन्त नहीं है ?
4. क्या आप अपनी गलतियों को याद करके अक्सर दुखी होते रहते हैं ?
5. क्या आपकी भावनाओं को जल्दी ही ठेस लग जाती है ?
6. क्या आप समझते हैं कि आपकी इच्छा शक्ति काफी दृढ़ है ?
7. क्या प्रायः आप ऐसी बाते कह या कर जाते हैं जिनके कारण बाद में आपको पछताना पड़ता है ?
8. क्या अक्सर किसी एक कार्य को करते हुये आप दूसरी बातें सोचने लगते हैं ?
9. क्या आप भविष्य में क्या होगा इस बात के लिये बहुत चिन्तित रहते हैं ?
10. क्या आपको अपने साथियों को आगे बढ़ते हुए देखकर बेहद जलन होती है ?
11. क्या दूसरे व्यक्तियों को तकलीफ उठाते देखकर आप मन ही मन प्रसन्न होते हैं ?
12. क्या काम काज के बढ़ जाने से आपको कभी-कभी बहुत झुंझलाहट हो जाती है ?
13. क्या प्रायः आप अपने आपको असुरक्षित सा अनुभव करते हैं ?
14. क्या कभी कभी आप अपने आपको अपमानित या गिरा हुआ इन्सान समझते हैं ?
15. क्या आपको बहुत सी बातों से चिढ़ या घृणा है ?
16. क्या आपकी रुचियाँ और इच्छायें बहुत जल्दी-जल्दी बदला करती हैं ?
17. क्या आप सोचते हैं कि इस दुनिया मे आपसे कोई सच्ची हमदर्दी दिखाने वाला नहीं है ?
18. किसी परेशानी के समय क्या आपको अच्छी तरह मालूम होता है कि कौन-सी बात आपको परेशान कर रही है ?
19. क्या किसी समय जैसा आप अनुभव कर रहे हैं उसे वैसे ही दूसरों को बताने में आपको कोई दिक्कत नहीं होती ?
20. क्या आप समझते हैं कि आप अपनी अच्छाईयों और बुराइयों से भलीभाँति परिचित हैं ?

| क्रमांक | कथन |
|---|---|
| 21. | क्या आप अपने स्वयं के प्रयत्नों द्वारा कोई नयी खोज या किसी बात को नये ढंग से कहने या करने में हिचकिचाहट या घबराहट का अनुभव करते हैं ? |
| 22. | क्या आप यह सोचते हैं कि आप अपनी जिन्दगी में कुछ नहीं कर सकते ? |
| 23. | क्या आप अपने बारे में यह अच्छी तरह जानते हैं कि किन बातों से आपको सुख या दुख पहुँचता है ? |
| 24. | क्या आप यह समझते हैं कि जिन्दगी मे आने वाली हर चुनौती का आप डट कर मुकाबला कर सकते है ? |
| 25. | क्या आपकी अपने बारे में यह धारणा है कि आप लोगों का दिल आसानी से जीत लेते हैं ? |

**भाग - 2**

| क्रमांक | कथन |
|---|---|
| 26. | क्या अपने बारे में गलत बात कहने वाले से आप शीघ्र ही निपट लेना चाहते है ? |
| 27. | क्या आप अपनी जिन्दगी में आने वाले झटकों से शीघ्र ही उबर जाते है ? |
| 28. | क्या आप यह महसूस करते हैं कि आपकी जिन्दगी मे काफी कुछ आपके नियन्त्रण में है ? |
| 29. | मन में विरोधी इच्छाओं के उत्पन्न होने पर समय को देखते हुये क्या आप उचित निर्णय लेने में सफल हो जाते है ? |
| 30. | क्या अपनी समस्यायें सुलझाने में आपको प्रायः दूसरों के परामर्श या सहायता पर निर्भर रहना पड़ता है ? |
| 31. | क्या आप अपना हर काम पूरी लगन और तत्परता से करते है ? |
| 32. | क्या आप प्रायः असफलताओं से घबराकर अपना धैर्य और संतुलन खो बैठते हैं ? |
| 33. | क्या किसी के द्वारा अपमानित होने पर आप काफी समय तक परेशान रहते हैं ? |
| 34. | क्या दूसरों से प्रतिशोध लेने की इच्छा आपको परेशान करती रहती है ? |
| 35. | क्या आपको अपने किये हुये कार्य से कभी भी पूर्ण संतुष्टि नहीं होती तथा आप उसे और अच्छा बनाने के लिये चिन्तित रहते है ? |
| 36. | क्या आप सोचते हैं कि आपकी गलतियों अथवा गलत आदतों के लिये दूसरे लोग अथवा परिस्थितियाँ अधिक उत्तरदायी हैं ? |
| 37. | क्या आपको लगता है कि आप किसी भी काम को ठीक तरह से नहीं कर पाते ? |

| क्रमांक | कथन |
|---|---|
| 38. | क्या आप जैसे दिखाई देते हैं या व्यवहार करते है उससे आपको अक्सर शर्मिन्दगी का अनुभव होता है ? |
| 39. | जब तक अपनी इच्छित वस्तु को प्राप्त न कर ले तब तक उसे लेकर क्या आप बहुत ही व्यग्र या चिन्तित रहते हैं। |
| 40. | क्या आपको प्रचलित तरीकों से हटकर नये तरीके अपनाने में काफी समय लगता है ? |
| 41. | क्या आप एक बार जो ठान लेते हो, उसे पूरा करके ही दम लेते हैं ? |
| 42. | क्या आपको कोई देखे या न देखे आप अपना उत्तरदायित्व हर समय ठीक तरह निभाना चाहते हैं ? |
| 43. | क्या आप यह अनुभव करते हैं कि आपको कुछ ऐसा करना चाहिये जो दूसरों से हटकर हो ? |
| 44. | क्या आप यह मानते हैं कि सभी को अपने जीवन लक्ष्य ऐसे चुनने चाहिये जो अधिक से अधिक चुनौतीपूर्ण हों ? |
| 45. | क्या दूसरों के द्वारा अपनी कमजोरियों या गलतियों के बारे में कुछ भी सुनकर आपको बेहद बुरा लगता है ? |
| 46. | क्या निराशा के क्षणों में कभी-कभी आपका अपने ऊपर से विश्वास ही उठ जाता है ? |
| 47. | क्या जब भी आप किसी गंभीर समस्या से घिर जाते हैं तो दूसरों से सहायता लेने को दौड़ पड़ते हैं ? |
| 48. | क्या जब भी आप कोई कार्य हाथ में लेते हैं तो कोई न कोई बात ऐसी हो जाती है कि आप लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते ? |
| 49. | जब भी आपसे कोई काम बिगड़ जाता है तो क्या आप अपने आपको कोसना शुरू कर देते हैं ? |
| 50. | क्या जब तक आपको कोई प्रेरित या मजबूर न करे आप कोई कार्य नहीं कर सकते ? |

## भाग - 3

| | |
|---|---|
| 51. | क्या आपका अपने नजदीकी लोगों पर पूरा विश्वास है ? |
| 52. | क्या दूसरों को आपके बारे में यह धारणा है कि आप कठिन परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होते ? |
| 53. | क्या आप यह जानते हैं या जानने की कोशिश करते है कि आपके नजदीकी किसी भी सामाजिक समूह जैसे पास-पड़ोस, मित्रमंडली आदि में किसके किसके साथ कैसे सम्बन्ध हैं ? |

| क्रमांक | कथन |
|---|---|
| 54. | क्या आपको जल्दी ही यह आभास हो जाता है कि आपका कोई नजदीकी मित्र किसी कारण परेशान है ? |
| 55. | क्या आपको यह जानने में देर नहीं लगती कि दूसरा व्यक्ति आपको बेवकूफ बना रहा है ? |
| 56. | क्या आप जल्दी ही जान जाते हैं कि आपसे बात करने वाले के मुँह में राम तथा बगल में छुरी है ? |
| 57. | क्या आप यह मानते हैं कि चाहे कुछ भी हो हमें दूसरों के पचड़े में नहीं पड़ना चाहिए ? |
| 58. | क्या आपको अपने किसी मित्र/मित्रों पर पूरा विश्वास है कि वे कठिन समय में आपका साथ देंगे ? |
| 59. | क्या आपको जल्दी ही यह आभास हो जाता है कि आपका कोई मित्र या परिजन आपसे किसी कारणवश नाराज है ? |
| 60. | क्या आप अच्छी तरह जानते हैं कि किन बातों को कहना या करना आपके मित्र या परिजनों को अच्छा या बुरा लगता है ? |
| 61. | क्या आप अपने लिये यह मानते हैं कि आप दूसरों के चेहरे पढ़कर उनको दिल की बात समझ लेते हैं ? |
| 62. | क्या आप यह अच्छी तरह कह सकते हैं कि आपको अपने नजदीकी साथियों या परिजनों की अच्छाई-बुराइयों का भली भाँति ज्ञान है ? |
| 63. | क्या आप यह अच्छी तरह जानते हैं कि आपके मित्रों या घरवालों की आपसे क्या-क्या अपेक्षायें हैं ? |
| 64. | क्या आपको अपने नजदीकी दोस्तों की पसंद-नापसंद तथा रुचि-अरुचि के बारे में ठीक तरह ज्ञान है ? |
| 65. | क्या आप यह अनुभव करते हैं कि लोग आपको एक विश्वसनीय और जिम्मेदार व्यक्ति समझते हैं ? |
| 66. | क्या आप अपने से पहले दूसरों की आवश्यकताओं तथा चाहत को समझने की कोशिश करते हैं ? |
| 67. | कुछ कहने या करने से पहले क्या आप यह सोचने का प्रयत्न करते हैं कि दूसरों पर इसका क्या असर होगा ? |
| 68. | क्या अपने फायदे या नुकसान की परवाह किए बिना आप दूसरों से सम्बन्ध बनाए रखने को अधिक महत्व देते हैं ? |
| 69. | क्या आप इस विचार से परेशान हो जाते हैं कि दूसरे आपको या आपके कार्य को देख रहे हैं ? |

| क्रमांक | कथन |
|---|---|
| 70. | क्या वास्तव में आपको अक्सर यह आभास हो जाता है कि कौन व्यक्ति आपकी प्रगति से जलते हैं ? |
| 71. | क्या आप ठीक तरह से यह बता सकते हैं कि आपके हितैषी या सच्चे मित्र कौन हैं ? |
| 72. | क्या किसी को हँसते या बातें करते हुए देखकर आपको ऐसा लगता है कि वे आपको देखकर हँस रहे हैं या आपकी बुराई कर रहे हैं ? |
| 73. | क्या आपको ऐसा लगता है कि आपके अच्छे व्यवहार के कारण लोग आपको पसन्द करते हैं ? |
| 74. | आपके अस्वस्थ्य होने पर अगर कोई साथी आपका हालचाल पूछता है तो क्या आपको उसकी वास्तविक संवेदना या दिखावे की पहचान हो जाती है ? |
| 75. | क्या आपके मित्र या परिजन कठिन परिस्थितियों में आपसे परामर्श या सहायता मिलने की आशा रखते हैं ? |

## भाग - 4

| | |
|---|---|
| 76. | क्या आप आसानी से नये मित्र बना लेते हैं या जान पहचान बढ़ा लेते हैं ? |
| 77. | क्या आप समझते है कि इस संसार में किसी पर विश्वास करना ठीक नहीं है ? |
| 78. | क्या आप अपने से अलग विचारधारा वाले व्यक्तियों से बातें करना या मिलना-जुलना भी पसन्द नहीं करते ? |
| 79. | क्या आप जल्दी ही दूसरों से सहायता या सहानुभूति प्राप्त कर लेते हैं ? |
| 80. | क्या आपको दूसरे व्यक्तियों की मुसीबत में सहायता करना अच्छा लगता है ? |
| 81. | क्या आप किसी समारोह में लोगों की एक दूसरे से जान पहचान कराने की जिम्मेदारी ले लेते हैं ? |
| 82. | क्या आप अक्सर सामूहिक कार्यों में आगे रहकर नेतृत्व प्रदान करने की कोशिश करते हैं ? |
| 83. | क्या समुदाय के लोग अथवा आपके साथी आपको अपने से बहुत अधिक दूर मानकर आपसे मिलने जुलने से कतराते हैं ? |
| 84. | क्या दूसरे व्यक्तियों या साथियों के मिलने पर आप उन्हें पर्याप्त सम्मान देने या उनकी बातें ध्यान से सुनने का प्रयत्न करते हैं ? |
| 85. | क्या आप समझते हैं कि दूसरे लोग या आपके साथी आपके कार्यों पर अनावश्यक रूप से कड़ी नजर रखते हैं या आपके बारे में जासूसी करते हैं ? |

| क्रमांक | कथन |
|---|---|
| 86. | क्या आपकी अक्सर अपने साथियों या दूसरे लोगों के साथ कहा सुनी हो जाती है ? |
| 87. | क्या अपने किसी साथी के द्वारा कोई गलती होने पर आप सभी के सामने उसकी आलोचना करने लग जाते हैं ? |
| 88. | क्या आप दूसरों को उनकी उपलब्धियों के लिये बधाई देने में प्रसन्नता का अनुभव करते हैं ? |
| 89. | क्या जैसे ही आपको किसी की समस्या के बारे में पता चलता है आप तुरन्त ही उसकी सहायता करने के बारे में सोचने लगते हैं ? |
| 90. | क्या विचारों में भिन्नता होते हुये भी आप दूसरों की सहायता के लिये तैयार रहते हैं ? |
| 91. | क्या किसी से प्यार होते हुए भी आप '**मैं तुम्हें प्यार करता हूँ**' ऐसे शब्द नहीं बोल पाते ? |
| 92. | क्या आप यह मानते हैं कि अपरिचितों से थोड़ा दूर या भावनात्मक रूप से ठंडा रहना ही ठीक है ? |
| 93. | क्या आपको दूसरों पर हँसना या छींटाकशी करना अच्छा लगता है ? |
| 94. | क्या अपनी पसन्द या चाहत को व्यक्त करने के बजाय आप यह सोचते हैं कि दूसरा व्यक्ति स्वयं ही इसे समझ लेगा ? |
| 95. | क्या आप यह सोचते हैं कि किसी भी दुखद समाचार से अपने साथी या परिजनों को तुरन्त ही अवगत करा देना चाहिये चाहे उसका नतीजा कुछ भी क्यों न हो ? |
| 96. | क्या कामकाज के गंभीर क्षणों में भी आप हल्की-फुल्की बातें कर माहौल को सहज बनाने की कोशिश करते हैं ? |
| 97. | क्या आप यह मानते हैं कि वाद-विवाद में उलझने पर चाहे किसी को अच्छा लगे या बुरा, खरी खरी कहना ही ठीक रहता है ? |
| 98. | आपका मित्र अपने किसी आत्मीय की मृत्यु से दुखी है, इस समय क्या आप उससे मिलने जुलने से कतरायेंगे ? |
| 99. | क्या सामूहिक चर्चा या प्रोजेक्ट में लोग आपकी बातें ध्यान से सुनना या आपके साथ काम करना काफी पसन्द करते हैं ? |
| 100. | क्या वार्तालाप के दौरान आप यह चाहते हैं कि दूसरों की बातें सुनने की बजाय आप अपनी ही बातें कहते रहें ? |

© 2009 All right reserved. Reproduction in any form is a violation of Copyright Act.
Reusable Booklet of Mangal Emotional Intelligence Inventory (M E I I). Hindi Version

Dr. SUREKHA JAWADE (born at Nagpur, Maharashtra, 1976) is Head of Department (Hindi), Assistant Professor & Associate NCC Officer at St. Thomas College, Bhilai (C.G). She has been contributing in the development of Higher Education from past 23 years.

She has done M.A.(Hindi), M.A. (Economics), M.A. (Psychology), M.Ed and M.Phil (Education). She was Awarded Ph.D. in Hindi in 2017 for her specialization is on Mahashewta Devi Ki h Project funded by UGC.

Kahaniyo Main Samajik Chetna. She has also completed one Minor Research Project funded by UGC.

She has been awarded Rajyapuraskar (Bharat Scouts and Guides) in 1991, Exceptional Talent award in NIAP (Commandant Certificate of Merit) in 2014 and Chief Minister Award for Best ANO at NCC events in 2019.

She has published more than 20 Research Papers in Various Journals. She has also published two books and one chapter in Women's Hindi book. She has conducted two National Webinars, more than five Community development programs and one 10 days Certificate Program.

9 788195 180080

₹ 180

**ADITI PUBLICATION**

Near Ice Factory, Opp. Shakti Sound, Service Gali, Kushalpur, Raipur (C.G.)

Mob. 91 94252 10308, E-mail:shodhsamagam1@gmail.com, www.shodhsamagam.com